

## यदि आप विद्वानी बनना चाहते हैं

तो नीचे लिखे ग्रंथका तथा जैन धर्म के ग्रन्थों का स्वाध्याय कीजिये और नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार कीजिये और कमीशन काटकर सब जगह के छपे जैनग्रन्थ और हरकिस्म की पुस्तकें मंगा लीजिये । विशेष हाल जानना चाहे तो ॥ का टिकट भेजकर हमारे पुस्तकालय का सूचीपत्र मंगाकर देखिये—

### श्रीपद्मनंदि पंचविंशतिका ।

उपदेश से भरा हुआ ग्रंथ बहुत थोड़ी प्रतियां रह गई है जल्दी मंगाने नहीं तो विक्र जानेपर धारपछताइयेगा । ऐसा उत्तम ग्रंथ फिर न छप सकेना और न इतनीकम धौछावर पर मिल सकेगा ।

यह संस्कृत ग्रंथ श्रीपद्मनंदि आचार्य का बनाया हुआ है । जिसकी अनैक टीकायें मौजूद है परन्तु वे सब टीकायें आधुनिक भाषा जानने वालों की समझ में नहीं आतीं उन्हीं लोगों के हितके वांस्ते सुगम हिन्दी भाषानुवाद सहित सुन्दरेशी कागजपर मोटे अक्षरों में खुले पत्र संख्या ५३० बड़े साइज के शास्त्राकारगलों सहित तैयार है इसके विषयों की गणना तो नाम ही से प्रगट होती है इसलिये ज्यावह लिखना फञ्जल है विशेष आप ग्रंथ देखेंगे तो प्रसन्न होंगे न्योछावर सिर्फ ५) है ।

मिलने का पता—**मैनेजर श्रौजैन भारतीयभवन पो० बनारस सिधी ।**

## भूमिका ।

कविवर पं० टेकचन्द जी का यह पञ्चमरु और नन्दीश्वर पूजन विधान कैसा है, यह बतलाना मानों सूर्य को दीपक दिखलाना है। इसमें तेगुरु की चाल, वीर जिनन्द की चाल और मुण्यणानन्द आदि नामके अनेक नये छन्द हैं। इसकी कविता का आनन्द और पदों का लालित्य भावुक पढ़ने वालों के मनको मोह लेता है।

हमको खेद है कि इतनी सुन्दर पुस्तक की केवल दो ही प्रतियाँ (जिनमें से दूसरी प्रति पहिली की ही प्रतिलिपि थी।) मिलने के कारण से हम इसका सम्पादन यथोचित रीति से न कर सके। यद्यपि हमने मूलप्रति के छन्दोभङ्ग और स्थान २ पर अनुपयुक्त शब्द आदि दूषणों को निकालने का काम प्रयत्न नहीं किया तथापि बहुत सम्भव है कि इसमें प्रेस सम्बन्धी अशुद्धियाँ रह गई हों। अतः पाठकों से प्रार्थना है कि वह ऐसे अवसर पर सुधार कर पढ़ें तथा इसका सुचना प्रकाशक को भी दे दिया करें, जिससे अगली आवृत्ति में वही अशुद्धियाँ न होने पावें।

‘कविवर ने अपने जन्म से किस भूमि को अलंकृत किया था?’ ‘वह किस समय में हुए थे?’ आदि प्रश्नों के उत्तर बहुत प्रयत्न करने पर भी नहीं मिल सके। अतः इस विषय में हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं। यदि कुछ मिल सका तो अगली आवृत्ति में देने का यत्न किया जावेगा।

आपके वलाये हुए कर्म दहन पाठ, मञ्च परमेष्ठी पाठ और पञ्च कल्याणक पाठ आदि

और भी कई ग्रन्थ हैं। जिनमें से अभी तक केवल एक कर्म ग्रन्थ ही बर्म्बई से छापकर प्रकाशित हुआ था जो कि निकलते ही हार्थो हाथ विक गया। बम्बईपरमेष्ठी पाठ शीघ्र ही 'जैन भारती भवन बनारस' से छापकर प्रकाशित होने वाला है, जिससे पाठक-कवि की काव्यता के विषय में और भी निश्चय कर सकेंगे।

इस ग्रन्थ का विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है, अन्तर-केवल इतनाही है कि इसमें नंदीश्वर द्वीप तक के सभी अकृत्यम जिन चैत्यालयों के अर्घ दिए हुए हैं। यह पुस्तक मांडला बनाकर पूजन करने वालों के भी बड़े काम की है, क्योंकि इसमें कोई स्थान छूटने नहीं पाया है।

अन्त में मेरी पाठकों से यह प्रार्थना है कि मुझको न तो 'धर्मशास्त्र' और न साहित्य का ही पुरे तोरसे ज्ञान है। मैंने केवल टका भाव से प्रेरित होकर यह कार्य किया है। अतः इसमें जो कुछ मोटी २ गलतियाँ हो उनको मेरी गलतियाँ समझ कर क्षमा करें।

भदनी-बनारस ।

चन्द्रशेखर शास्त्री

मिति-चैत्र शुक्ल १ सं० १९८१ वि०

ता० ५ अपरैल सन् १९२४ ई०

काव्यसाहित्य तोर्याचार्य

प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय।

हम काशी के ईस श्रीयुत बाबू रघुनाथ दासजी जोहरी को कोटिशः धन्यवाद देते हैं जिनसे हमको समय २ पर सहायता मिलती रहती है। तथा आपने पुस्तकालय के लिये स्थान भी दे रक्खा है।

प्रकाशक ।

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः ।

कविवरटेकचन्द्रजीकृत

# पञ्चमेरु और नंदीश्वर पूजन विधान

अथ व्रतमाहात्म्यवर्णन

( सर्वदीर्घ बेसरी बंद )

वानी पूजों देवा केरी । तातैं दूटे मोहा जेरी ॥

साधा ध्याऊं सांचा भाऊं । या भौ माही नाहीं आऊं ॥१॥

सर्वदीर्घ जोगीरासाकी चाल—

देवा सेवो सो या भौ में आवा जावो हारै  
आपा तारवो औरै तारै ज्यो नावा औतारै ॥

जाका ध्याना जोगी आना पापा हाना काजै ।

ऐसो नाथो द्यो मो साथो भौ भौ साता साजै ॥२॥  
साधा साधो जो या भौ में जाकै रगा नहीं ।

आपू साधै प्रानी नावा ध्याना ध्येना माहीं ॥

तापा आपै जापा जापै मोको रखै सोही ।

मेरो सीसा याकै पावें नाखो दीना होही ॥३॥

ऐसे देवा याकी वानी साधा तीनो सोही ।

मो को ज्ञानो ऐसो दीजौ मो पै रजी होही ॥

तातैं नांदी दीपा पांचों मेरा पूजा सारी ।

पूरी हो जावै सो कीजौ ऐसी वांछा म्हारी ॥४॥

बेसरी बंद—या पूजा श्रीपाले कीनी । काया रोगा की खय लीनी ॥

या पूजा सो लोका देवै । जो जीवा नीका है सेवै ॥५॥

सर्वलघु दोहा—वरत यह सुखकरन लाख समचित कर सिव सहल ।

पहल करम सब नस भजय कर यह वरत जु टहल ॥६॥

चौपाई—यो व्रत मयणासुंदर करौ । सुभट सातसै को डुख हरौ ॥

ताकर जगमें माहिमा पाय । इम लख भव पूजौ मनलाय ॥७॥

अद्विज्य बंद—

वरस एकमें वार तीन यह व्रत करै । कातिक फागुन सुदी अषाढ विषे धरै ॥

करै वसे लग आठ तथा वृष तीन जी । सक्त बड़ीका धार करै परवीन जी ॥८॥

सोरठा—शक्त बड़ी धर सोय, करै बहुत दिन भी सही ।

उद्यापन फिर होय, नाहीं व्रत दूनों करै ॥९॥

गीता बंद—पीछे जु शक्ति प्रमाण अपनी द्रव्य तै पूजा करै ।

उपकरण सुन्दर छत्र चामर लायके मंदिर धरै ॥

पुस्तक लिखावै दान करुणा देय दीन बुलायजी ।

इस रीति धर्म उद्योत ठानै जीव सो शिव पायजी ॥१०॥

पद्धती बंद—

या विध अनेक महिमा निधान । यह वरत कहो धुनिमें प्रमाण ।

कवि कवलों गुण भापै अपार । बहु कहिये कहां जग माहिं सार ॥११॥

इति व्रतमहिमा समाप्त ।

अथ प्रथमही समुच्चय पूजा

स्थापना ( चाल जोगीरासे की )

पांचों मेर महान कनक के तिन पै जिनके थानों ।

गिनत असी तिन मांहि बिब हूँ रतन मई पुन खानो ॥

पूव खगा तौ जाय जजै वहां हम यहां भावना भावै

तातै मेरनके जिन बिब सु थापन थाप जजावै ॥१२॥

ॐ हीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थविबसमूह ! अत्र अवतर अवतरसंबौ षट् आहाननम्

ॐ हीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थविबसमूह ! अत्र तिष्ठ ठः उः षः स्थापनम् ।

ॐ हीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थविबसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव षट्  
सन्निधिकरणम् । ( अत्र पुष्पाञ्जलिं लिपेत् )

अथाष्टक ( चाल जोगीरासे की )

निर्मल मन सो ही जल उज्जल भाजन भाव करायो ।

आर्ज्य भाव रस सोही जीवा ता बिन पय धर लायो ॥

वीसी चार सबै जिन मंदिर पांच मेरुके जानौ ।

सो में मन वच काय जजत हौं करन पापको हानौ ॥१॥



ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जन्मजरामृत्स्थुविनाशनायजलं नि०

शीतल भाव कियौ शुभ चंदन भक्त गंध को धारी ।

मंद मोह भ्रारी करता मैं भर लायौ सुख करी ॥

वीसी चार सबै जिन मंदिर पांच मेरुकेँ जानौ ।

सो मैं मन वच काय जजत हो करन पापको हानौ ॥२॥

ॐ १ पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यःसंसारतापविनाशनायचंदनं नि०

भाव अखंडित उज्जल सोही अक्षत सुभग बनाये ।

नाना भक्त उपाय उक्त तै पुन्य बंध को आये ॥वीसी०॥३॥

ॐ २ पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अक्षयपद्माप्तये अक्षतान् नि०॥

भाव प्रफुल्लित फूल बनाये बहुविध भक्ति सुरंगा ।

विनयवान तामें गंधनीकी पुष्पन लायौ चंगा ॥वीसी०॥४॥

ॐ ३ पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

परणत परम मनोज्ञ तने में शुभ नैवेद्य बनायौ ।

नाना रस नय द्वार घनी यह भक्त भाव कर आयौ ॥ वीसी० ॥५॥

ॐ ही पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः छुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥

सम्यक्ज्ञान प्रकाश सकल तत्वन को दीप बनाई ।

हरष सो पातर कीनो ता धर नीकी आरति छाई ॥ वीसी० ॥६॥

ॐ ही पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो मोहन्यकारविनाशनाय दीपं नि० ॥

अष्ट करम शुभ चंदन पीस्यौ ताकी धूप बनाई ।

धर्म ध्यान बहु तेज अगनि में जारी प्रीति बढ़ाई ॥ वीसी० ॥७॥

ॐ ही पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥

पाप रहत परणाम किए फल समता थाल भराये

आनंद होत सुलेय हाथ में बहुबिध जिन गुन गाये ॥ वीसी० ॥८॥

ॐ ही पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

ऐसे आठों द्रव्य मनोहर ताकौं अरघ बनई ।

निर्मल भाव बनाय रकेवी ता धर शीश नवाई ॥ वीसी० ॥६॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽअर्घ नि० ॥

चौपाई—पांचो मेरु असी जिन धाम । है बिनकीये ध्रुव तिस ठाम ॥

तिन मध बिंब देव जिनराय । सो मैं पूजौं अर्घ चढाय ॥१०॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो महार्घनिर्वपामीति स्वाहा ॥२०॥

### अथ प्रत्येक मेरुपूजा

प्रथमही सुदर्शन मेरु की पूजा ( अङ्कित्तु बंद )

मेरु सुदर्शन जान वड़े विस्तार जी । मानूं स्वर्ग थंभनकुंथभा सार जी ॥

जाँपे पौडश धाम जिने सुर के सहै। सो हम थापन थाप जजै इस ही मही ? ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबसमूह। अत्र अत्रतर अत्रतर संवोषट्

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबसमूह। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह। अत्र मम सम्बिहितो भव भव षष्ट  
सम्बधिकरणं ( परिपुण्यांजलिं विप्रेत् )

अथाष्टक ( चौपाई )

निरमल नीर गंग की लाय । झारी मणि मय माहि धराय ॥

मेर सुदर्शन जिनके धाम । षोडश पूजों तीरथ ठाम ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ॥

वावन चंदन नीर घसाय । लायौ प्रभु पातरभें जाय । मेरु० ॥२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० ॥

अक्षत मुक्ताफल से लाय । उज्ज्वल खंड बिना सुख दाय ॥ मेरु० ॥३॥

ॐ ह्रीं मेरुदर्शनसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपद्मान्तयेभ्रतान् नि० ॥

फूल कलप द्रमके सुख रूप । लायौ माला गूथ अनूप ॥ मेरु० ॥४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥  
 नाना रस नैवेद बनाय । मोदक आदि भले सुखदाय ॥

मेरु सुदर्शन जिनके धाम । षोडश पूजों तीरथ ठाम ॥५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं नि०  
 दीपक रतनमई तम हार । लायौ धर पातर मैं सार ॥ मेरु० ॥६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं नि० ॥

सार धूप दश गंध बनाय । खेळं जिन चरनन सुखदाय ॥ मेरु० ॥७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥

श्रीफल खारक अनि फल और । लायो भक्त हिये धरजोर ॥ मेरु० ॥८॥

ॐ १ सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥९॥

जल चंदन अक्षत पुह लेय । चरु दीपक फल धूप सु खेय ॥ मेरु ॥९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥

प्रत्येक अर्घ ( पद्धरी बंद )

वनभद्रसाल जिन थान चार । विन कीने शाश्वत पुन्यकार ॥

ते पूजो वसु द्रव अर्घ लाय । संबंध सुदर्शन मेरु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रसालसंबधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नंदन वन चव जिन थान जान । सो तीर्थ पापहारी सु मान् ॥ तें पूजो ० । ३

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसंबधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

चव जिन थल सोहे मनस थान । सब रतन खण्ड उपमा निधान । तें पूजो ० ३

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनसवनसंबधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

जिन थल चव पांडुक वन मभार । सुर खग पूजें तहां भक्ति धार । ते पूजो ० ४

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसंबधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

चव गज दंतो चत्र जिन सुगेह । महांसुंदर देखें होय नेह । तें पूजो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोरचतुर्गजदंतसंबधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

- जंतु वृक्षे जिन थान सोय । रचना माणि भय तहां विंबजोय ।  
 ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय । संबंध सुदर्शन मेरु पाय ॥६॥
- ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजंबूवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ ६ ॥  
 जिन थान शालमालि वृक्ष ठांही । मुख महिमा कहते पारनाहिं । तेपूजो ॥७
- ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥  
 सुदर्शनमेरु दक्षिण दिसाय । जिन थान कुलाचल पै जो पाय ॥  
 तिनमें जिन विंब मनोज्ञ सोय । जिनके पद पूजों दीन होय ॥८॥
- ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिदक्षिणदिक्कुलाचलस्थजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥८॥  
 उत्तरदिश याही मेर जानि । जिन भवन कुलाचल पै सुथान । तिन० ॥
- ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिउत्तरदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयाय अर्घ नि० ॥९॥  
 सुदर्शनमेरु पूरव दिशाय । जिन थान वद्व्यारन सीस पाय । तिनमें० १०
- ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासंबंध्यष्टवद्व्यारगिरस्यजिनालयेभ्यो अर्घं नि० ॥१०॥  
 पच्छिम दिश येही मेरु सारं । विद्व्यारन पै जिन भवन धार । तिनमें० ॥

ॐ हीं सुदर्शनमेरुपच्छिमदिशासंबन्धवृत्तारगिरस्यजिनालयेभ्यो अर्घंनि० ॥११॥

इस मेर सुदर्शन पूर्व जाय । विजयार्ध पै जिनभवन पाय ॥ तिन० १२

ॐ हीं सुदर्शनमेरुसंबन्धिपूर्वदिशायाःषोडशविजयार्धपर्वतस्यषोडशजिनालयेभ्यो अर्घं नि०

पच्छिम सुदर्शन मेरु ठांहि । वैताडन पै जिन भवन पाहि ॥ तिन० ॥१३॥

ॐ १ सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशि विजयार्धपर्वतस्यजिनालयेभ्यो अर्घं नि० ॥ १३ ॥

इस मेर सुदर्शन द्धन जानि । रूपाचल पै इक जिन सुथानि ॥ तिनमें १४

ॐ हीं सुदर्शनमेरोः दक्षिणदिशि एकरूपाचलस्यैकजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति० ॥ १४

ऊत्तर दिश इसही मेर जान । विजयार्ध पै जिन भवन मान । तिनमें०

ॐ १ सुदर्शनमेरोरुत्तरदिशिरूपाचलस्यैकजिनालयाय अर्घं निर्वपामी० ॥ १५ ॥

अदिल्ल छंद—

तीस चार वैताड सोल वदयार जी । दोय विरछ पट कुलाचला लख सारजी ॥



षोडश वनके थान चार गजदंतहैं। ह्यां इक इक जिन भवन जजौं ते संत हैं ॥१६  
 ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वापामीति० ॥१६ ॥

अथ जयमाल ( दोहा )

मेरु सुभग थानक भलौ, तीरथ पातक नास ।

जजौं थान इस संगके, मन वच तन है दास ॥१॥

चाल चलतेगुरूकी—

मेरु सुदरशन सोहनौ तीरथ पद सुखदाय ॥ टेक ॥

ऊँचो जोजन लाख है, सब कनक स्वरूप

नीचै को माणि तेज है, बहु घेर अनूप ॥ मेरु सु० ॥२॥

भद्रसाल वन मेरुकी, जड़ भौमभकार

ता ऊपर फिर जाइये, वन नंदन सार ॥ मेरु सु० ॥३॥

ता ऊपर वन सोम है, तीजौ वन सोय ।

ऊपर पांडुक वन कहौ, चौथो अवलोक्य ॥ मेरु सु० ॥४॥  
 इक वन वन, चव जानिये, श्री जिनवर ठाम ।  
 कनक रतन जड़िये सही, सब करौ प्रणाम ॥ मेरु सु० ॥५॥  
 ठाम ठाम सर वावडी, सुभ महल अनूप ।  
 देव तहां क्रीडा करै, वापक गुन रूप ॥ मेरु सु० ॥६॥  
 कै चारन मुनि जाय हैं, जिन वंदन काज ।  
 ध्यान धरै शुभ थानमें, पावै शिवराज ॥ मेरु सु० ॥७॥  
 पांडुक वनमें जानिये, मध चूलक ठाम ।  
 वैडूरक मणिमय सही रंग हस्त सुधाम । मेरु सु० ॥८॥  
 जोजन लुंग चालीस है, तिस ऊपर जोय ।  
 कंस अंतरे स्वर्ग है, सौ धर्म जुग सोय ॥ मेरु सु० ॥९॥  
 इत्यादिक महिमा घनी, कवलों वरनाय ।

सहस्र जीवतै कीजिये; तौ हु पार न पाय ।  
मेरु सुदर्शन सोहनो तीरथ पद सुखदाय ॥१०॥

सब गिर में परधान है, यह मेर महान ।  
याँके अन परवार हैं, तहां जिनके थान ॥ मेरु सु० ॥११॥

तीस चार बैताढ हैं, षोडश वद्वार ।  
और कुलाचल षट सही, गजदंत वृक्ष सार ॥ मेरु सु० ॥१२॥  
एक एक जिन थान हैं, में पूजों सार ।

मेरु सुदर्शन है सही, कंचन वरन अपार ॥ मेरु सु० ॥१३॥  
दोषा—मेरु माहि मन राखिये, तहां अकतीरतम थान ।  
जिनके मुनि चारण तहां तातै नमि पुनि आनि ॥१४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेखसंबंधिजिनालेयभयो पूर्यार्धं निर्वपापीति स्वाहा ।  
( इति सुदर्शन मेरु पूजा संपूर्ण )

अथ द्वितीय विजयमेरु पूजा । ( गीता बंद )

खंड धातकी पूर्व दिशकौ विजय मेरु सुथानं हे ।

तिस ऊपरे जिन धाम षोडश अकीर्तम पुन धाम हूँ ॥

इन आदि और कुलाचलादिक मेरु संबंधी सही ।

जिन थान कूं यहां थापि पूजूं भक्त तै पुनकी मही ॥१॥

ॐ हीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयानि अत्र अवतरत भवतरत संवैषट् [श्याहाननम्]

ॐ हीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयानि अत्र तिष्ठत षः षः स्थापनं ।

ॐ हीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयानि अत्र ममसन्निहितानिभवतभवतत्रषट्सन्धिकरणे

अथाष्टक ( अद्विल्ल बंद )

नीर निरमलो गंग धारको लाइये । सुन्दर भारी घालि हरपबहु पाइये ।

जनम मरन दुख हरन महा श्रुति गायजी । पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी

ॐ हीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वापामीति

चंदन बावन अगर गंधले सारजी । निरमल नीर घसाय आप कर धार जी ॥  
 भौ तपरोग मिटावनकौ गुन गायजी । पूज्य जिनालय विजयमेर जुतपायजी  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०  
 अक्षत उज्ज्वल खंड विनाही लाइयौ । प्राशुक जलतैं धोय सुद्ध करवाइयौ ॥  
 थान अखयका लोभ धारमै आयजी । पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो अन्नयपदप्राप्तये अन्नान् निर्वपामीति०  
 फूल कनक चांदीके प्राशुक लेयजी । तिनको हार बनाय शोभजुत जेयजी ॥  
 कामदहनके काज भक्त धर आयजी । पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय शुष्पं निर्वपामीति०  
 नाना रस नैवेद आदि मोदकसही । कीनै शुभ आचार साहित अब इस मही ॥  
 भूखरोग खय काज आज हम आयजी । पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी  
 ॐ १ विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो जुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति

मणिमय दीपक लेख जोत परकाश जी। कंचन पातर धार होय प्रभु दासजी  
 भेटन मिथ्या ध्यांत पूजने आयजी। पूज्य जिनालय विजय मेर जुत पायजी६  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामो०  
 धूप मनोज्ञ वनाय गंध दश डारजी। खवन आयौ अगिन माहि श्रुति धारजी  
 कर्म दाह फल चाह और नहीं आयजी। पूज्य जिनालय विजय मेरुजुतपायजी  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति  
 श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सारजी। खारिक आदि अनेक और फल धारजी।।  
 कारण शिव फललोभ आप पै आयजी। पूज्य जिनालय विजय मेरुजुतपायजी  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्रप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा  
 नीर गंध तंडुल पुह चरु ले दीपजी। धूप फलाविध आठ अरघ सुभ दीपजी  
 नाना सुखके काज पाप खयदायजी। पूज्य जिनालय विजय मेरुजुतपायजी  
 ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो अन्नर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

## प्रत्येक अर्घ [ जिनजंषि की चाल ]

विजय मेर की भौम मे बन भद्रसाल सुखदाई जी ।

च्यार जिनालय मणिमई ते पूजों अर्घ बनाई जी ॥

मन वच भक्त लगाय कै ॥१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नंदन वन या ऊपरै तिस अहिमा अधिक विचरो जी ।

विजय मेर शुभ स्थान है यह तीरथ निरसल जानोजी । मन० ।

ॐ ह्रीं विलयमेरोः नंदनवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

इस ऊपर वन सोम है तहां देव विद्याधर जावें जी ।

चारि जिनालय हैं तहां ते पूजों मैं अघ ढावैजी ॥

विजय मेर तीरथ सही तहां जिन थल मुनि शिव पावैजी । मन० ।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः सौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पांडुक वन सब ऊपरे जहां स्तन मई जिन गेहाजी ।

चारि जिनालय जिन कहे ते पूजौ अरघ समेहाजी ॥

विजय मेर तीरथ सही तहां जिन थल मुनि शिव पावैजी । मन० । ४

ॐ हीं विजयमेरोः पांडुकवनसंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

विजय मेर दक्षिण दिशा जंबू वृक्ष बहु विस्तारो जी ।

तापै इक जिन गेह है सो पूजौ अरघ संवारौ जी ॥

विजय मेर तीरथ सही पूजै सुर खग नित सारो जी ।

ॐ हीं विजयमेखदक्षिणदिशस्थजंबूवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

उत्तर दिश इस मेर की सालमली वृक्ष जानौ जी ।

तापै जिन मंदिर सही ते पूजौ अरघ चढ़ानौ जी ॥

विजय मेर तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानौ जी ॥६॥

ॐ हीं विजयमेरोरुत्तरदिशायाः साल्मलिवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्व० ॥ ६ ॥



विजय मेर गजदंत पै जिन थानक है पुन्य दाई जी ।

सो चारों थल बाँदिये ले अरघ महा, हरपाई जी ॥

विजय मेर तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानों जी ॥७॥

ॐ हीं विजयमेरोश्चतुर्गजदंतोपरिचतुर्जिनालयेभ्योर्ध्वं निर्वपा० ॥७॥

विजय मेर दक्षिण दिसा गिरि तीन कुलाचल सारोजी ।

तिन पै जिन थानक सही ते पूजौं हरप अपारोजी ॥

विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानों जी ॥८॥

ॐ हीं विजयमेरोः दक्षिणदिशायाः त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योर्ध्वं निर्वपायीति

ऊत्तर दिस इस मेरकी गिरि कहे कुलाचल तीनों जी ।

तिन पै जिन मंदिर सही ते पूजौं भक्ति नवीनों जी ॥

विजय मेर तीरथसही पूजै सुर खग यह थानों जी ॥ ६ ॥

ॐ हीं विजयमेरुसर्वंध्युत्तरदिशायास्त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्योर्ध्वं निर्व०

दक्षिण दिस बेताह है गिर विजय मेर तें जानों जी ।

तिन पै जिन थल विन किये ते पूजौ हरष बढ़ानो जी ।

विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानों जी ॥१०॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिश्येकविजयार्धोप्येजिनलयायार्धं निर्वपामीति स्वारा

विजय महा गिर मेर की विजयार्ध पश्चम सोला जी ।

तिन पै इक इक जिन भवन ते पूजै अघ होय खोला जी ॥

विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानों जी ॥११॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं नि०

विजय मेरु की उत्तरे विजयार्ध एक सुथानों जी ।

तापै इक-जिन थान है सो पूजौ कर सन्मानों जी ॥

विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानों जी ॥१२॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धोप्येकजिनचैत्यालयायाऽर्धं निर्वपामीति०

पूरब दिस इस मेर की विजयारथ महा गिरिदा जी ।

तिन पै षोडश जिन भवन पूजै मिट है अघ फंदा जी ॥

विजल मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानौ जी ॥१३॥

ॐ ही विजयमेरो: पूर्वदिशि षोडशविजयार्थेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्थं निर्व०

पूरब दिस इस मेर की बसु परवत सारं विक्षयारो जी ।

तिन पै जिन थल आठ हैं ते पूजौ मन वच धारो जी ॥

विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानौ जी ॥१४॥

ॐ ही विजयमेरो: पूर्वदिश्यष्टविक्षयारेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्थं निर्व० ॥१४॥

पच्छिम विजय सुमेर की आठ विद्यारं मुजानौ जी ।

आठ तिनौ पै जिन भवन ते पूजौ अघ सुआनौ जी ॥

विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानौ जी ॥१५॥

ॐ ही विजयमेरो: पश्चिमदिश्यष्टवक्षयारगिरिष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्थं निर्व०

विजय मेरु संग इस प्रकार वन चार जीगजदंता वृक्षदोय कुलाचल सारजी  
 विजयारध चौतीस वदयार सुजानियोइनपै जे जिन थान जजौ अर्धआनियो।  
 ॐ ही विजयमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्धं निर्वापामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ अथ जयमाल ॐ

दोहा—विजय मेरु दूजो सही, जान अकिरतम थान ।

या संबंध जे जिन भवन, पूजै सुर खग आन ॥१॥

मुणयणाणंद की चाल—

मेरु विजया विपै थान जिनके सही।बिब तिनमें जिसे देव जिन छबिकही ॥  
 दिष्ट नाशा दिये ध्यान पदमासनादिखते नाश होय पापकी वासना ॥२॥  
 शांति मुद्रा बिना राग सुखदायजीमानु अब दिव्य धुनि खिरीगी आंयजी

इन्द्र से दीन होय करै अरदासना । देखते नाश होय पापकी वासना ॥३॥  
 ध्यानमें मुनी जिन विंभ जे ध्याय है । आपनौ रूप ऐसो कियो चाय है ॥  
 जोय जिन ध्यान नहीं होय जग आसना । देखते नाश होय पापकी वासना  
 भक्त मन मोहनी देह जिनराय की । देखते बड़-उर राग सुखदायजी ॥  
 मोक्ष तिय नित बहै रूप तिन भासना । देखते नाश होय पापकी वासना ॥  
 देखते मूर्ति जिन राय सुध आय है । सोम अति सोहनी काय जिनराय है ॥  
 लखै शुभ ध्यान दुर ध्यान की वासना । देखते नाश होय पापकी वासना । ६।  
 आदि इनको धनी ऊपमा दायजी । अकिरतम देव जिन विंभ में पायजी ॥  
 तीर्थ मंगल करा और समता सना । देखते नाश होय पापकी वासना ॥  
 विंभ सब स्तन मय तजे बहु धारजी । जोति तिनकी कने दबै शशिसारजी ॥  
 कनक मय गेह जिन धरे परकासना । देखते नाश होय पापकी वासना ॥

बड़े बिस्तार जिन थानको जानियैकोटि त्रय वेष्टि रचना घनी मानियै ॥  
 बाग बन महल वापी मुहुख नाशना देखते नाश होय पापकी वासना ॥६॥  
 दूसरे भेरु विजय तनी विधि कही वरनतै सो भ पुन्य रास भव्यनि लही ।  
 तीर्थ सिद्ध क्षेत्र मुनि करै कर्म नाशना देखते नाश होय पापकी वासना ॥७॥  
 विजय यह भेरु बहुत घेरै जानिये दिव खग गमन तहँ सदा तिस थानिये ॥  
 जजै ते जाय हम करै यहँ उपासना देखते नाश होय पापकी वासना ॥११॥

दोहा—विजय भेरु गुनमाल को, जपै जाय भव कोय ।

ताको तीरथ लाभ है, दिये भाव फल होय ॥१२॥

ॐ हौं विजयभेरुसंबंधि जिना लये भयो पूर्णार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

( इति विजय भेरु पूजा समाप्त )

अथ तृतीय अचलमेरु पूजा ( बेसरी बन्द )

मेरु अचल सनबंधि जिनाला । सो पूजै सुर खग गुनमाला ।

हम तौ सकत हीन हूँ भाई । तातैं यहां थपि भावन भाई ॥१॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालान्यान्यत्रावतरतावतरत संबीषट् ( इत्याह्वाननं )

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालान्यान्यत्र तिष्ठत ठःठःम्यापनम् ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालान्यान्यत्रमसन्निहितानिभवतभवत वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक । ( अद्विल्ल बंद )

नीर निरमलो कनक पात्र धर लायजी । उज्जल सार सुगंध मनोहर आयजी ॥

अचल मेरु सनबंधि जिते जिन थानजी । पूजौ भक्त वढाय फलै भव हानिजी । १ ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधि जिनचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय ललं निर्वपामीतिस्वाहा ?

चंदन चारु सुगंध अगर मिलवायजी । प्राशुक पानी लाय घस्यो थुति गायजी ।

अचल मेरु सनबंधि जिते जिन थानजी । पूजौ ताफल भव आताप मिटावजी २

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा । ३ ।

अक्षत अखंड अनूप गंध धारी सही।धवल रंग मुक्ता फलसे पुन की मही।

अचल मेर सनबंध जिते जिन थान जी।पूजों ता फल अक्षय पदकों पायजी  
ॐ हीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

फूल कलप वृक्ष सार गंध दायक सही।कंचन चांदी फूल आपनै कर मही।  
अचलमेर सनबंध जिते जिन थानजी।सो पूजों पद मदन तनों खय जानिजी

ॐ हीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यः कागवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति४  
नाना रस सुभ लाय कियौ नैवेदजी। सोदक आदि बनाय लिए निखेदजी।

अचल मेर सनबंध जिते जिन थानजी।सो पूजों फल भूख तनी होय हानिजी।  
ॐ हीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो छुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक मणिमयसार जोति तम नासना।कनक पात्र धर लाय करौ श्रुतिभासन।  
अचलमेर सनबंध जिते जिन थानजी।सो पूजों फल होय मिथ्या तम नासजी

ॐ हीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो माहाद्यकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०



अगर चंदन आदि जो दशधा धूपजी अगनि मध्य खेऊं निज हौन अरूपजी  
 अचलमेरु सनबंध जिते जिन थानजी । सो पूजा फल कर्म दहै शिव जायजी  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥  
 श्री फल लौगवदाम सुपारी सारजी आदि इने अनि आनि फला सुखकारकी  
 अचलमेरु सनबंध जिते जिन थानजी सो पूजौं फल मोक्ष हौनकौं जानिजी ८  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलमाप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥  
 जल चंदन क्षत पुष्प चरु दीपक रुही धूप और फल आठ लेय अर्घे दही ॥  
 अचलमेरु सनबंध जिते जिन थानजी सो पूजौं फल अमल हौन हित आनिजी ९  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदमाप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा । ९ ॥

अथ प्रत्येक अर्घ ( चोणई )

अचल मेरु की भौम मभार । भद्रसाल जानौं वनसार ।

ताके मध चव जिनवर थान । ते हौं पूजौं शक्त प्रमान ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः भद्रसालवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योर्ध्वं निर्व० ॥१॥

नंदन नाम महा बन सोय । अचल मेरु के ऊपर जोय ॥

ताके माहिं चार जिनथान । तेऊ पूजौं शक्त प्रमान ॥२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः नंदनवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योर्ध्वं निर्वपामीति स्वाहा । २॥  
अचल मेरु के ऊपर सोय । सोमनस नाम वन अद्भुत जोय ॥

तामें चार जिनालय जान । ते हौं पूजौं सक्त प्रमान ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः सोमनसवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योर्ध्वं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पांडुक दन सब ऊपर जोय । अचल मेरु सनवंधी सोय ।

ता विच चार जिनालय जानि । ते हू पूजौं सक्ति प्रमान ॥४॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पांडुकवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योर्ध्वं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

अचल मेरु की दक्खिन दिशा । जंबू वृद्ध ऊपरे लसा ।

एक जिनेसुर जी का थान । सो ही पूजों सक्त प्रमान ॥५॥

ॐ हीं अचलमेरोःदक्षिणदिशस्थजंबूवृक्षास्यैकजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥५॥

अचल मेरु की उत्तर सोय । सालमली वृछ मण मय जोय ।

तापै एक जिनेसुर थान । सोहू पूजों सक्त प्रमान ॥ ६ ॥

ॐ हीं अचलमेरोरुत्तरदिशायाःशाल्मलिहृत्त्रोपर्य्यैकजिनचैत्यालयाथार्घंनिर्वपामीति स्वाशः६

अचल मेरु के चार बखान । गजदंता परवत हित दान ॥

तिन पै चार जिनालय जान । ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥७॥

ॐ हीं अचलमेरोश्चतुर्गजदंतोपरिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

अचल मेरु की दक्षिन सोय । तीन कुलाचल गिर सुभ जोय ।

तिन पै तीन जिनालय जान । ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥८॥

ॐ हीं अचलमेरोःदक्षिणदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीतिस्वाशः८

अचल मेरु उत्तर दिग्जाय । तीन कुलाचल परवत पाय ।

तिन पै तीन जिनालय जान । ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥६॥

ॐ हीं अचलमेरो रत्त दिशि त्रिपुक्ताचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्बपामीति स्मारा ॥६॥

अचल मेरु की पूरब जाय । आठ वदयार महा गिर पाय ।

तिन इक इक पै हैं जिन थान । ते हों पूजों सक्त प्रमान ॥१०॥

ॐ हीं अचलमेरोः पूर्वदिश्यष्टवदयारगिरिष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्बपामीति ॥१०॥

पच्छम अचल मेरु की जोय । आठ वदयार बड़े गिर सोय ॥

तिन पै आठों ही जिन थान । ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥११॥

ॐ हीं अचलमेरोः पश्चिमदिश्यष्टवदयारष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्बपामीति ॥११॥

अचल मेरु की पूरब जोय । हैं विजयारथ षोडश सोय ॥

तिन पै षोडश ही जिनथान । सो हों पूजों सक्त प्रमान ॥१२॥

ॐ हीं अचलमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्थेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्बपामीति ॥१२॥

अचल मेरु की दक्षिण भौम । विजयारथ गिर है इक सोम ॥

- ता ऊपर एक जिन को थान । सो दू पूजों सक्त प्रमान ॥१३॥  
 ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धोपैकजिनालयायार्धं निर्वपामीति० ॥१४॥  
 मेरु अचल की पश्चिम जेइ । षोडश विजयार्ध गिर लेइ ॥  
 तिन सब पै एकइक जिनथान । सो हौं पूजों सक्त प्रमान ॥१५॥  
 ॐ ह्रीं अचलमेरोः पश्चिमदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं नि० १४॥  
 अचल मेरु की उत्तर धरा । एक खगाचल पर्वत परा ।  
 तापै एक जिनालय जान । सो हौं पूजों सक्त प्रमान ॥१५॥  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुरुत्तरदिश्येकविजयार्धस्यैकजिनालयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥  
 खंड धातकी दक्षिण जाय । इज्वाकार एक गिर पाय ।  
 ता पै एक जिनालय मान । सो हौं पूजों सक्त प्रमान ॥१६॥  
 ॐ ह्रीं धातकीखंडदक्षिणदिश्यिच्छाकारपर्वतोपैकजिनालयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥  
 उत्तर दिश खंड धातकी माहि । इज्वाकार मध्य में पाहि ।

ता पै एक जिनालय मान । सो मैं पूजौं सक्त प्रमान ॥१७॥

ॐ हीं घातकीखंडस्योत्तरदिशियच्चाकारपर्वतोपर्येकजिनालयायार्धं निर्वपामीति० ॥१७॥

ऐसे अचल भेर विध जोय । सो सो धरा जिनालय सोय ।

ते हौं अरघ लाय हरषाय । पूजौं सब जिन थल थुति गात्र ॥१८॥

ॐ हीं अचलमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

### ॐ अथ जयमाल ॐ

दोरा-अचल मेरु पै जिन न्हवन होय मुनी शिव जाय ।

तातैं तीरथ निरमलौ मैं पूजौं गुन गाय ॥ १ ॥

बेसरी बंद-अचल मेरु सनबंधी जानौं । हूँ जिन थान सु कहौ बखानौं ।

अरु पर्वत गिर याकी लारा । सुनतैं जीव लहैं पुन सारा ॥२॥

जहां जहाँ जिन मंदिर होई । सो सो थान कहौं सुनि सोई ॥

चव्वन षोडश जिन थल धारा । सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥३॥  
 चार कहे गजदंता भाई । इन पै चव जिन गेह बताई ।  
 सो भी रतन मई शुभकारा । सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥४॥  
 जंबू सालमंली वृद्ध जानौ । इन जुग पै जुग जिन थल मानौ ।  
 तहँ भी सुर खग का पैसारा । सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥५॥  
 षोडश गिर वदयार हैं भाई तिन पै षोडश जिन ग्रह पाई ।  
 तहां जाय पूजौ शुभ धारा । सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥६॥  
 विजयारथ चौतीसा जानौ । ते सब चांदी मय तन धनौ ।  
 तिन पै चौतिस जिन थल मारा । सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥७॥  
 इद्वाकार दोय गिर जानौ । इन पै दोय जिनालय मानौ ॥  
 तहां सुर खग पूजें हितकारा । सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥८॥

इत्यादिक जिन मंदिर भाई। सबै थान जिय को सुखदाई ।  
 ये सब तीरथ थान अपारा । सुनतैं जीव लहै पुन सारा ॥६॥  
 जो पूजै परतछ तहँ जाई । ताके उदय पुन्य होय भाई ॥  
 हम परोक्ष गुन गावैं ल्यारा । सुन तैं जीव लहै पुन सारा ॥१०॥  
 हम यहां पूज्य भावना भावैं । ताही कर भव सफल करवैं ॥  
 गावैं राग धार गुन भारा । सुनतैं जीव लहै पुन सारा ॥११॥

दोहा—खंड धातकी पछम दिस, अचलभेर सुभ धाम ।

ता संबंध तीरथ सबै, जजौं जिनेश्वर ठाम ॥१३॥

ॐ श्री धातकीपश्चिमदिश्यबलमेरुसंबधिजिनवैत्यालयेभ्यो पूर्णार्धिं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति अचलभेर पूजा समाप्त ।



## ॐ अथ चतुर्थ मंदिरमेरु संबंधी जिनालय पूजा ॐ

मुण्यणाणंद की चाल

अर्घ्यह कर धरा पूर्व दिसा जानिये । मेर चौथा भला मंदर सुख मानिये ।

तासंबंधी जिते जिन थानका है सही सो सकल थापिइहां जजौ पुन्यकी मही ॥

ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयानि अत्र अवतरत अवतरत संबौषट् ( इत्याहानम् )

ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयानि अत्र तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधि-

( पुष्पंजलिं क्षिपेत् )

करणं ।

अथाष्टक ( भुजंगप्रयात बंद )

लयानीर प्राशुक भले पात्र माहीं । धरी भक्त उरमें लिये हाथ ठाहीं ।

करुं वीनती गुनन की गाय माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥

ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

भला अगर चंदन घसा नीर माहीं । धरे गंध बहु भंवर गुजार लाहीं ।  
 लया पात्र माहीं कही भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥२॥  
 ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिन चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपा०  
 भले खंडबिन तंडुला सोध लाया । घने उज्जला सोभदाई सुहाया ।  
 धरे पात्र माहीं पढी भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥३॥  
 ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिन चैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽन्नतान् निर्वपा०  
 लाग् फूल शुभ वृक्ष के गंध दाई । करी माल नीकी भली उक्त लाई ॥  
 धरी आपने हाथ कह भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥४॥  
 ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिन चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपापीति०  
 नैवेद जाना भरे स्वाद लाया । घने मेलि रस मोदकादिक बनाया ।  
 धरे पात्र करले पढी भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥ ५ ॥  
 ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिन चैत्यालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपापीति०

लए दीप मणमय महा जोति धारी । गया अंध तिनतें जगे छोडि सारी ।

लए आरती गाय मुख भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥६॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०

करी धूप दशधा लगी गंध आनी । घसी नीस्तें जोर वारीक ठानी ।

धरी अगनि पै हरष कह भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥७॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो दृष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

लए श्रीफला लौंग बादाम भारी । भले खारका और जानौं सुपारी ।

चले पात्रमें धार पढ़ भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥८॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

धैर नीर चंदन अक्षत पहुप भारी । नईवेद दीपक भला धूप थारी ।

धरी अर्घ करले भली भक्त माला । जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥९॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अथ प्रत्येक अर्घ ( गृणयणाणंदकी चाल )

मेरु मंदिर तनी भौममें जानिये । महा बन भद्रसाला सुखद मानिये ॥

तास मध्यचार जिन थान पुन्यकी मही । सो जजौ अर्घतें वीनती सुख कही ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसुभद्रसालवनसंबधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

ऊपरें मेरु मंदिर तनों जानिये । नंदन बन सोभिण् महा सुख मानिये ॥

ता विषैं चार जिनराज मंदिर सही । सो जजौ अर्घसों वीनती सुख कही ॥२॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः नंदनवनसंबधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मेरु मंदिर तने ऊपरें सारजी । सौमवन है सही सकल सुखकारजी ॥

ता विषैं चार जिन देव मंदिर सही । सो जजौ अर्घसों वीनती सुख कही ॥३॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः सौमनसवनसंबधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

ऊपरें मेरु मंदिर तने जानिये । पांडुवन सोहनो तीर्थसो मानिये ॥

चार जिन थान विन किए तहां हैं सही । सो जजौ अर्घतें वीनती सुख कही ॥४॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पांडकचनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घ्यः निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥  
 मेरु मंदिर दक्षिण दिसा जोय जी । वृक्ष जंबू कहौ रतन मय सोयजी ॥  
 तास ऊपर कहौ थान जिनको सही । सो जजौ अर्घ ते वीनती मुख कही ॥५॥  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः दक्षिणदिशि जंबूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपा०  
 मेरु मंदिर तनी दिसा उत्तर गिनौ । सालमल वृक्ष सो मण मई धुनि भनौ ॥  
 एक जिन गेह विन कियो तहां है सही । सोजजौ अर्घते वीनती मुख कही ॥६॥  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोरुत्तरदिशि शाल्मलित्रक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपा०  
 मेरु मंदिर तने चार गज दंतजी । तिन विपे चार जिन थान अघ तंतजी ॥  
 देव खगजाय जिन सेव करैह सही । सोजजौ अर्घते वीनती मुख कही ॥७॥  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोश्चतुर्गजदन्तेषु चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ॥  
 मेरु मंदिर तने दक्षिन दिश भौमजी । तीन गिर कुलाचल जान अति सोमजी ॥  
 तिन विपे तीन जिन थान शुभकी मही । सोजजौ अर्घते वीनती मुख कही ॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः दक्षिणदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभाः त्रिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं नि०  
 उत्तर दिशमेरु मंदिर तनी जानिये । तीन परवत भले कुलाचल मानिये ॥॥  
 तिन विषैं तीनही थान जिनके सही । सोजजौं अर्धतें वीनती मुख कही ॥६॥  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरुत्तरदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः त्रिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं निर्व०  
 मेरु पूरुब दिसा मंदिर की जानिये । आठ वदयार गिर बड़े शुभ मानिये ॥  
 तिन विषैं आठही जिन भवनहैं सही । सोजजौं अर्धतें वीनती मुखकही ॥१०॥  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पूर्वदिशासंबंध्यष्टवत्तारगिरिष्वष्टाभ्यः त्रिनालयेभ्योऽर्धं निर्व०  
 पच्छिम दिस मेरु मंदिर तनी जोइयोआठ वक्षार गिर कनक मय सोइये ॥  
 तिन विषैं आठ जिन थान शुभकी मही । सोजजौं अर्धतें वीनतीमुखकही ११  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पश्चिमदिश्यष्टासुवत्तारगिरिष्वष्टाभ्यः त्रिनालयेभ्योऽर्धं नि० ११  
 पूरुब दिश मेरु मंदिर तनी सारजी । जान विजयारथा पोडशा भारजी ॥  
 ऊपरै जिन भवन सबन के हैं सही।सो जजौं अर्धतें वीनती मुखकही ॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पूर्वदिशासंबंधिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं निर्ध०  
 दृच्छन् दिश मेरु मंदिर तनी जायजी। एक रुपाचला खगन को थायजी।।  
 ता विपै एक जिनराज मंदिर सही। सो जजौ अर्ध तें वीनती मुखकही।।  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः दक्षिणदिशासंबंध्येकविजयार्धगिरावेकजिनालयायार्ध नि० १३  
 मेरु मंदिर तनी पश्चिम दिश भाय है। षोडशा खगाचल रूप मय पायहै।।  
 तिन धरै देव जिन भवन षोडश सही। सो जजौ अर्ध तें वीनती मुखकही।।  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पश्चिमदिशासंबंधिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्धं निर्ध०  
 मंदिर शुभ मेरुकी उत्तर दिश जायजी। खगाचल एक गिर रूपमय थायजी  
 ता विपै एक जिनराज थल है सही। सो जजौ अर्ध तें वीनती मुख कही।।  
 ॐ ह्रीं मंदिरमेरोरुक्तः दिशासंबंध्येकविजयार्धेषु कजिनालयायार्ध निर्ध० ॥२५॥  
 आदि इन मेरु मंदिर तनी लारजी। थान बहु सुभग सच आकिरतम सारजी  
 तिन विपै आकिरतम ठाम जिनजेसही। सो जजौ अर्ध तें वीनती मुखकही

ॐ हीं मंदिरं मेरुसंबंधि जिनालये भयोऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा १६ ।

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा-मंदिर मेरु सु सोहनौ चत्रथो अचल अनादि ।  
ता संबंधि जिन थानको नमौं करौं अघ वादि ॥१॥

परमादी की चाल—

पौहकर अर्ध मभार पूख मेरु कहाजी ।  
मंदिर ताका नाश जिन धुनि माहि चयाजी ॥२॥  
जाके शीश मभार पांडुक है बन नीका ।

रचना धै अपार सुखदायक सबजीका ॥ ३ ॥

ता बन चार अनूप पांडुक शिला कहीजी ।

अर्धचन्द्र आकार बहु विस्तार लही जी ॥४॥



मोठी जोजन आठ लंबी सौ लक्ष भाई ।

चौड़ी है जो पचास जोजन अति सुखदाई ॥५॥

ता ऊपर सिंघपीठ तीन कहे अति भारी ।

ता मघ कलश हजार आठ रहे शुभकारी ॥६॥

मंगल द्रव वसु जान धूप घटादिक सारे ।

रचना और अनेक जानि अनादि अपारे ॥७॥

ऐसी सिला अनूप ता ऊपर जिन आँवें ।

बौठि सिंहासन ठाम प्रभु असनान करौवें ॥ ८ ॥

इस खंड जे जिन होंय तिनकों इन्द्र सुलौवें ।

ह्यां धर सुर सब आय क्षीरोदधि जल भावें ॥ ९ ॥

कलश सहस वसु आनि सागर से विस्तारा ।

बसु जोजन त्वंग जानि एते मध्य विचारा ॥ १० ॥  
इक जोजन मुख सार ऐसे कलश सुलावै ।

हाथों हाथ सुदेव हरिके हाथ धरावै ॥ ११ ॥

इन्द्र तवै कर लेय जय जय शब्द करावै ।

जिन शिर एके साथ धारा कलश ढरावै ॥ १२ ॥

कर हरि नृत्य श्रुति गान जिनको घर पहुचावै ।

सातें ए गिराज जगमें तीरथ गावै ॥ १३ ॥

तहँ मुनि चारण जाय ध्यान धरै सुध लाई ।

कर्म काटि शिव लेय तातैं तीरथ थाई ॥ १४ ॥

इम बहु उपमा धार मंदिर जानों भेरा ।

कनक मई सब पीठ त्वंग बड़ा बहु फेरा ॥ १५ ॥

दोहा—चौथा मंदिर मेरुजो सुर खग को आधार ।

हम यहां तैं पूजन तनी भावन भवैं सार ॥ १६ ॥

ॐ हीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

( इति मंदिरमेरु पूजा समाप्त )

—०५५५५५—

❀ अथ पंचम विद्युन्माली मेरु पूजा ❀

गीताछंद—विद्युन्माली मेरु पञ्चम पच्छम पुष्कर दीप जी ।

गजदंत वृक्ष कुलात्रला वैताडि पै शुभ दीपजी ॥

इन आदि सकल वक्ष्यार थानक ऊपरैं जिन थानजी ।

ते जजों थापन थापि में यहां भावना शुभ आनजी ॥१॥

ॐ हीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधीनि जिनालयान्पत्र भवंतरत भवतरत संबीपट् आहाननम्

ॐ हीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधीनि जिनालयानि अत्र तिष्ठतः ऋः ऋः स्वापनीः

ॐ ह्रीं विद्युन्पालिमेरुसंबंधीनि जिनालयानि चत्रमम सन्निहितानि भवत भवत उच्चिधिक०  
( पुष्पांजलिं लिपेत् )

अथाष्टकम् । ( त्रिभंगी वन्द )

जल प्राशुक लाया अति हरपाया निरमल पाया सुखकारी ।  
धर कंचन भारी भक्त उचारी नय शिव धारी गुन भारी ॥  
यह विद्युनमाली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही ।  
इनके मनसंधी जिन थल संधी भैं सब वंदों पुन्य मही ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वपामी०॥१॥

हम चंदन आनी गंध जु थानी घसि शुचि पानी त्यार किया ।  
धर रतनन भारी निज कर धारी भक्त उचारी हर्ष लिया ॥ यहवि ॥२॥  
ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो संसा'तापविनाशाय चदन निर्वपामीति ॥२॥

शुभ अक्षत जानौं खंड न मानौ धवल अधानौ वास धरा ।

तिनकों शुभ धोये पुंज संजोये भाव मिलोये पुन्य करा । यह०  
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽन्नतान् निर्व० ॥३॥

अब फूल सुताये गंध धराये सब मन भाये शोभ दई ।  
 कलवृक्षानि के हैं हाथ लये हैं गूथ दए हैं माल ठई ॥

यह विद्युनमाली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही ।

इनके सनमंधी जिन थल संधी में सब बन्दों पुन्य मही ॥५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यः कामवाणक्विवंसनाय पु०पं निर्व० ॥४॥  
 नैवेद्या सुभ्यारा बहु रस धारा स्वाद अपारा तुस्त किये ।

धर कंचन थाली भक्त विशाली कह गुन माली हरष हिये । यह०  
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो नुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति ॥५॥

माणि दीपक आन्या सब तम भान्या ज्ञान उगान्या हम लाये ।  
 धर पातर माही उर हरषाही भक्त बड़ाई गुन गाये ॥ यह त्रि० ॥६॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामी०  
हम धूप वनाए शुभ गंध लाए दश विध भाए मेलि लई ।

अव भक्त बड़ाई मुख श्रुति गई अगनि धराई खेय दई यहवि० ॥७॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो दृष्टाष्टकमैन्धनदहनाय धूपं निर्वपामीति०  
फल लौंग सुपारी श्री फल भारी खारिक सारी हम लाए ।

फिर जान वदाभा और सुकामा लेकर ठामा शुभ दाए ॥ यहवि० ॥८॥

ॐ १ विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलमाप्तये फलं निर्वपामीति० ॥९॥  
जल चंदन आन्या अक्षत भिलाना पहुप सुजाना गंध धरा ।

चरुदीप सु धूपा फलजु अनूपा अर्घ सरुपा हाथ करा ॥ यह० ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽन्नर्घपदमाप्तयेऽर्घं निर्वपा० ॥१०॥  
अथ प्रत्येक अर्घ । ( चौपाई )

पहुकर अर्घ पछम दिस मेर । विद्युनमाली नाम अति घेर ।

ताके भद्रसाल जिन थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन ॥१॥  
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं नि० ॥ १ ॥

थाही विद्युन्माली मेर । ता ऊपरि नंदन वन हेर ।

ता वन में चव जिनके थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन २  
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिनंदनवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं निर्वपामीति ॥२॥

इस ही मेरु सोअवन सोय । ताकी महिमा अद्भुत होय ।

ता वन विपै चार जिन थान । सोहौं जजौं अरघ थुति आन ॥३॥  
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः सौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं नि० ॥ ३ ॥

मेरु सुविद्युन्माली देख । तिस पै पांडुक वन है येक ।

ताके अघ चव जिनके थान । सो हौं जजौं अर्ध थुति आन ॥४॥  
 ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिपांडुकवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

विद्युन्माली मेर सुभाश । ताके चव गजदंते पाय ।

तीन इक इक पैहै जिनथान । सो हौं जजौं अरघ थुति आना ॥५॥

ॐ हौं विद्युन्मालिमेरुसंबधिचतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

याही मेर दक्षिण दिस जोय । जंबू नाम वृक्ष इक होय ।

ताके मध्य एक जिन थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन ॥६॥

ॐ विद्युन्मालिमेरुसंबधिदक्षिणदिशि जंबूदृष्टोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं नि० ॥६॥

इस ही मेर उत्तर दिस जोय । सालमली वृक्ष जानो सोय ।

ता ऊपर जिनको इक थान । सोहौं जजौं अरघ थुति आना ॥७॥

ॐ हौं विद्युन्मालिमेरुसंबंध्युत्तरदिशि शाल्मलिदृष्टोपर्येकजिनलयायार्घं नि० ॥७॥

याही मेर दक्षिण दिस जाय । तीन कुलाचल गिर सुभपाय ।

तिन पै तीन थान जिनराय । सोहौं जजौं अरघ थुति गाय ॥८॥

ॐ हौं विद्युन्मालिमेरुसंबधिदक्षिणदिशया त्रिषु कुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं नि० ॥८॥

उत्तर दिस इस मेरु सुजेय । तीन कुलाचल परवत तेय ।



तिन पै तीन देव जिन थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन ॥६॥

ॐ हौं उत्तरदिशि विद्युन्मालिमेरोः त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभिन्नालयेभ्योऽर्धं निर्वपामोति०

याही मेर पूरब दिश सोय । आठ वध्दार नाम गिर होय ।

तिन सबपै इक इक जिन थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन ॥१०॥

ॐ हौं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशायापष्टवन्नारपर्वतेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं नि० १०

याही मेर की पच्छिम सोय । आठ वध्दार नाम गिर होय ।

तिन पै आठ जिनेश्वर थान । सोहौं जजौं अरघ थुति आना ॥११॥

ॐ हौं विद्युन्मालिमेरुसंवधिपश्चिमदिशायापष्टवन्नारपर्वतेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्धं ॥११॥

पूरब इस ही मेर बताय । पोडश रुपाचल मन लाय ।

तिन इक इक पै है जिनथान । सोहौं जजौं अरघ थुति आना ॥१२॥

ॐ हौं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशि षोडशवित्रयार्धपर्वतेषु षोडशभिन्नालयेभ्योऽर्धं ॥१२॥

इस ही मेर दच्छिन दिस जोय । विजयारथ इक पर्वत सोय ।

ता ऊपर है इक जिन थान । सोहों जजौं अघ थुति आना । १३ ।  
ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धपर्वतोप्येकजिनालयायार्धं नि० । १३ ।

याही मेर पच्छिम दिस धरा । षोडश गिर वेताढ सु परा ।  
तिन सब पै जिनजी के थान । सो हों जजौं अर्ध थुति आना ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्धं नि०  
उत्तर इस ही मेर सुजाय । एक रूप गिर परवत पाय ।

जाके शीश एक जिन थान । सो हों जजौं अर्ध थुति आना ॥ १५ ॥  
ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धपर्वतोप्येकजिनालयायार्धं निर्वं ॥ १५ ॥

अर्ध दीप पहुकर के माहिं । दक्खिन इद्वाकार कहाहिं ।  
ता ऊपर इक जिनवर थान । सो हों जजौं अघ थुति आना । १६ ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पु० करार्द्धदक्षिणदिश्येकेद्वारापार्येकजिनचैत्यालयायार्धं । १६ ।  
याही दीप उत्तर दिश जाय । इद्वाकार महा गिर पाय ।

तापै इक है जिनकी थान । सोहों जजों अर्ध श्रुति आन । १७।  
 ॐ हों पुष्करार्धदीपोत्तरदिस्येकेच्चाकारपर्वतसंबंधिजिनचैत्यालयार्यार्ध नि० ॥१८॥  
 विद्युनमाली भेर सुलार । एते थान जान सुखकार ।  
 जो तीरथ हैं जिनके थान । सो हों जजों अर्ध श्रुति आन । १८॥  
 ॐ हों विद्युन्मलिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ।.

### ❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—पच्छिम पहुकर द्वीप भें विद्युन्माली भेर ।  
 कनक मई अति सोहनौ तीरथ निरमल घेर ॥१॥  
 बेसरी बंद—विद्युनमाली भेर सुथाना । तहां जिन गेह पाप मलहाना ।  
 तिनकी उपमा को सुखगाँवै । सहस्र जीभ तें पार न पावै ॥२॥  
 रतन विंघ कंचन जिन गेहा । देखत जन मन उपजे नेहा ।

उद्वै पुन्य ताके तहां जावै । तुछ पुन धारी दरशन पवै ॥३॥  
जाय देव खग इंद्र धनिंदा । तिननें पूख भव जिन वंदा ।  
हमसे हीनसक्त नहीं जावै । ताँ हंम यहा भावन भावै ॥४॥  
शची सहित हरि देव भिलाई । जाय मेर पूजै जिन पाई ।  
गावै गान भक्त मुख सेती । नटे नाच नाना गति जेती ॥५॥  
शची नचै हरताल बजावै । कभू नचै हर शची नचावै ।  
हाव भाव सब लीला ठानै । चंचल पग करतन क्षिग तानै ॥६॥  
नचै अकाश सुभक्त भू जाई । कभू दीखे कभू अदृश थाई ।  
दीर्घ तन कवडूं लघु होई । बजै ताल बैना धुन सोई ॥७॥  
बजै तार तंदूरे भाई । बजै मृदंग नफीरी आई ।  
सारंगी संहतार अपारा । बाजे बजे इत्यादिक सारा ॥८॥

सबका सुर इकताल बजावैं । मीठेसुर बहु देवा गावैं ।  
 हाथन की अंगुरी पै आवैं । अपसर बहुती निरत करावैं ॥६॥  
 ऐसे देव हरी तब जावैं । ऐसे भक्ति करै पुन्य लावैं ।  
 जैजै शब्द करैं मुख सोई । ताकरि पाए मैल निज धोई ॥१०॥  
 ऐसे तौर हर सुरतहां जावैं । वा खगराज भक्त वश आवैं ।  
 सोभी बहु विध सेवा ठानैं । भाव समान महा पुन्य आनैं ॥११॥

या विध सुर खग कर नित सेवा । ऐसा मेर थान शुभ देवा ।  
 विद्युनमाली मेर सुथाना । कवलों करों गुननका गाना ॥१२॥  
 तातैं जो भव पुन्यको चाहौ । तौ या मंदिर को शिर नाहौ ।  
 यह तीरथ शिव साधन ठामा । पुन्य बधन को है भवं दामा ॥१३॥  
 दोष-विद्युनमाली सेवतैं पाप नसे भय खाय ।

जे भव पूजे भाव सों ते निहचै शिव जाय ॥१४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वापमीति स्वाहा ॥१४॥

( इति विद्युन्मालिमेरु पूजा समाप्त )



आगे समुच्चय जयमाला



दोहा—मेरु सुदरशन जानिये, विजय अचल शुभ ठाम ।

मंदिर विद्युन्मालिया पाचों यह शुभ धाम ॥ १ ॥

मुणयणाणंदकी चाल—

दीप जंबू विपै मेरुसूदरशाना । लाख जोजन कहा लंग नभ फरसना ॥  
दूसरा धातकी खंड पूख दिसा । मेरुविजय महा शोभ जुत अतिलसा ॥२॥  
धातुकि खंड पश्चिम दिसा जानिये । तीसरा मेरु शुभ अचल सुख मानिये ॥

अर्धं पृहुकर विषैँ पूर्वं दिस सारजी । मेर भंडर कहा चतुरथा धारजी ॥३॥  
 दिसा पच्छम तनी अर्धं पृहुकर सही । पांचमा मेर विद्युनमाली कही ॥  
 चार यह मेर लंग सहस चौरासिया । कनक के सकल यह तीर्थ अधनासिया ॥  
 एक इक मेर पै चार बन हैं सही । एक बन माहि जिन थानचवा धुन कही ॥  
 चार बन तनै त्रिलि भए पोडश थला । पाच भेरन तने चार वीसी फला ॥५॥  
 मेर इक शैल गजदंस चव जानजी । पंच भेरन तनै वीस सुख थानजी ॥  
 पंच ही मेरके वृक्ष दश थाय हैं । सालिभल जंबू वृक्ष नाम शुभ दाय हैं ॥६॥  
 मेर इक एक पद कुलाचल सारजी । पंचके तीस बहु धरें विस्तारजी ॥  
 जान वैताड चौतीस इक मेरके । एक सत सतर पंच मेर शुभ धरें कै ॥७॥  
 जानि वदयार इक मेरके पोडसा । पंच भेरन तने असी गिन सोडसा ॥  
 इब्बाकार दोइ धातकी खंडजी । दोइ गिन अर्धं पृहुकर धरा भंडजी ॥८॥

सकल यह अकीरतम थान जानौं सही। इन विषैं सबन पै थान जिन शुभमही ॥  
 पंच क्षेत्रके सनमंध सब गाइये । तीन सत और चोरानवे पाइये ॥६॥  
 जानकों तौ सकत हीन हम है सही । भक्त वस भावना करत है इस मही ॥  
 आठही द्रव्यसुध लेय थुत गायजीजतहों सकल जिनगेह हरषायजी ॥१०॥  
 प्रोप पूजा करी राग हिरदें धरी । तासतें पुन्यकी पोट उरमें भरी ॥  
 तास फल भाव अति निरमले होगए। करो तब पाठ यहसुफल मानों भए ॥११॥  
 और सबजगत भूमजाल कविजा। नियो। एक जिन चरनको सरन सतमानियौ।  
 और नहीं आस यह चाहि जानों सही। हाथतें जजै यह थान फिर शिवमही ॥२॥

दोहा—पंच मेरुकी आरती और अकिरतम थान !

तिन पद टेक नभौ सदा जो चाहें सुध ज्ञान ॥१३॥

ॐ हां पंचमेरुसंबंधि त्रिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपापीनि स्वाहा ॥१३॥

इति पंचमेरु विद्याल समाप्त ।



❀ अथ मानुषोत्तर पर्वत के चार जिनालयों की पूजा ❀

अद्विल्ल बंद—

पहुकर दीप सुमध्य भाग भूमें सही । मानपोतर गिरवलाकार कंचन सही ।

तापैचवदिसचार अकीरतम जिन थला। सो पूजौंस थान थाप उर निरमला ।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिचत्वारिजिनालयान्यत्र अत्रतरत अवतरत सर्वौषट् आहाननं ।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिचत्वारिजिनालयान्यत्र तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्

ॐ णं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिचतुर्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत

सन्निधिकरणं ( परिपुण्यांजलिं क्षिपेत् )

अथाष्टक ( चौपाई )

जीव रहित निरमल जल लाय । कनक पियाले धर गुन गाय ।

पूजौं मानपोत्र जिन गेह । जनम मरन भेंटे फल एह ॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्व० ॥३॥

- चंदन अगर घस्यौ जल डार। आछि पातर करलै धार ।  
 पूजौ मानषोत्र जिनगेह । भौ डुल ताप भिटे फल एह ॥३॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनं नि० ॥३॥
- तंडुल उज्जल अखंड अनूप । कीनै शुद्ध धोय अनुरूप ॥  
 पूजौ मानषोत्र जिन गेह । ता फल सिद्धलोक फल लेय ॥४॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्योऽक्षयपद्मप्राप्तयेऽक्षतं नि० ॥४॥
- चांदी कनक कलपद्रुम जान । तिनके फूल गूथ हम आन ।  
 पूजौ मानषोत्र जिन गेह । मदनरोग नाशै फल एह ॥५॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो कामवाणघिह्वंसनाय पुष्पं नि० ॥
- नाना रस नैवेद वनाय । मोदक आदि किये कर लाय ।  
 पूजौ मानुषोत्र जिन गेह । वांछा रोग भिटी फल एह ॥६॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपा० ॥६॥

- दीपक स्तन मई मन लाय । पातर धर अति भावन भाय  
 पूजों मान षोत्र जिन गेह । मिथ्या मोह भिटै फल एह ॥७॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्व० ॥
- चंदन अगर धूप कर सार । खेऊँ अगनि माहीं थुति धार ।  
 पूजो मानषोत्र जिन गेह । कर्म जरौ ताको फल एह ॥८॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो दुष्टाकर्मदहनाय धूपं नि० ॥ ८ ॥
- श्रीफल और बदाम धुवाय । निरमल पातर धर गुन गाय ।  
 पूजो मानषोत्र जिन गेह । मरन भिटै शिव ले फल एह ॥९॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो मोक्षपदप्राप्तये फलं निर्वपामोति स्वाहा ॥९॥
- नीर गंध अक्षत पुष्प चरु सार । दीप धूप फल कर इक ठार ।  
 पूजो मानषोत्र जिन गेह । चय गति भवन भिटै फल एह ॥१०॥  
 ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्योऽनर्घपदऽप्राप्तयार्धं निर्वपामोति ॥१०॥

## ॐ अथ प्रत्येक अर्घ ॐ

सोरठ-मानपोत्र गिर जान, ताकी पूरब दिस सही ।

है जिन थान सुमानि, सो पूजों वसु द्रव्य तें ॥१॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिशासंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

दक्षिण धरा मम्भार, याही गिर ऊपर सही ।

तीरथ जिन थल सार, तें पूजों वसु द्रव्य तें ॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिशासंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

मानपोत्र के शीश, पच्छिम दिश जानों सही ।

जिन थल सब जग ईश, सो पूजों वसु द्रव्य तें ॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिशासंबन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

मानुपोत्र पै सोय, उत्तर दिश को जो कहे ।

जिनवर थान सु जाये, सो हौं पूजों भावतें ॥४॥

ॐ हीं मानुषोत्तरपर्वतोत्तरदिशासंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वं ॥३॥

पुहकर अर्घं सुदीप, मानपोत्र के पार कौं ।

तहां उत्पति क्षय कीय, सो सिध पूजों भावतें ॥५॥

ॐ हीं पुष्करगर्द्धद्वीपमानुषोत्तरपर्वताद्रे उत्पत्तिनयकाय अर्घं निर्वंपामीति० ॥ ५ ॥

दोहा—याही पहुकर दीपका सागर है सुखदाय ।

ताकी उत्पति छेद सो मैं पूजों श्रुति गाय ॥६॥

ॐ हीं पुष्करद्वीपवेष्टितसमुद्रस्योत्पत्तिवेदकाय अर्घं निर्वंपामी० ॥६॥

दीप वारुनी नीर निध वामें रचना जोर ।

सो या भू उत्पति तजी ते पूजों मद तोर ॥ ७ ॥

ॐ हीं बारुणीवरद्वीपगतिवेदकाय अर्घं निर्वंपामीति० ॥ ७ ॥

इस वारित भू वेढ कें जो सागर जलरास ।

जाकी उत्पति तिन तजी ते पूजों श्रुत भास ॥८॥

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपवेष्टितसमुद्रगतिच्छेदकाय अर्घं निर्वपा० ॥८॥

दीप क्षीर वर है सही भोग भोम सुभ थान ।

ताकी उत्पति तिन तजी सो पूजौ धर ध्यान ॥९॥

ॐ ह्रीं क्षीररद्वीपगतिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

क्षीर महासागर सही गुन को जान निधान ।

तामें उत्पति तिन तजी सो पूजौ शिव थान ॥१०॥

ॐ ह्रीं क्षीररसमुद्रस्योत्पत्तिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

दीप धिर्तवर शुभ धरा बहु जीवन को वास ।

तामें उत्पति तिन तजी ते पूजौ होय दास ॥११॥

ॐ ह्रीं घृतवरद्वीपगतिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

वेढि धिस्त वर दीपकों जो सागर शुभ नाम ।

तामें उत्पति तिन तजी ते हु जजौ शुभ थान ॥१२॥

ॐ ह्रीं घृतवरसमुद्रगतिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

इक्षु वर है दीप सो त्रस थावर को ठाम ।

ताकी गति छेदी तिने सो हु जजौं शुभ धाम ॥१३॥

ॐ ह्रीं इक्षुवरद्वीपगतिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

वेढि परो इस दीपकौ इक्षुवर दधि सोय ।

मरन जनम यामें तजे अर्घ सु पूजौं जेय ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं इक्षुवरसमुद्रगतिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

अष्टम द्वीप नदीश्वरा ताको बहु विस्तार ।

ताकी उत्पति तिन तजी सो पूजौं भव पार ॥१५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्पत्तिच्छेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

इस पहुंचर दीपादि दधि सकल जीवके धाम ।

तिनमें उत्पति तजि गण् सो पूजौं सिव धाम ॥१६॥

ॐ हीं पुष्करदीपादारभ्य नदीशरद्री पपर्यन्तमुत्पच्छिदकायार्थं नि० ॥२३॥

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—पहुंकर आधि दीप मध मानपोत्र गिर सोय ।

कंचन वरनौ सैल पै जिन थल बंदौ जोय ॥१॥

चेसरीछंद—तीजे दीप विषै मध भागा । मानपोत्र परवत शुभ जागा ।

बलयाकार तंग अति जानौ । मनुष लोक की हई प्रमानौ ॥२॥

याँके पार मनुख नहीं जावैं । देव जाय नाना सुख पावैं ।

इस तैं परे कर्म भू हेई । या गिर पार भोग भुमि जेई ॥३॥

यह गिर मानपोत्र गिर राजा । कनक मई सबही सुख काजा ।

तिस पै चार दिसा में जानौ । कूटकहे सुंदर अधिकानौ ॥४॥

तिन कूटन में सुर के वासा । महल बाग वन अति सुख रासा ।



तिन में एक एक सिध कूठा । चौ दिस चार जानि अघ छूटा ॥५॥  
 चौ दिश सिद्ध कूट पै जानौं । एक एक जिनवर का थानौं ।  
 सो थानक है अनादि अनन्ता । बिना किये जानो सब संता ॥६॥  
 कनक मई सब गेह जिन्ददा । रतन बिब तिनमें मुख कंदा ।  
 पूजें देव खगा थुति गाई । भूम गोचरी पहुँच न पाई ॥७॥  
 बँदतें पातक खय जावैं । पुन्य हीन नहिं दरशन पावैं ॥  
 सो हम अल्प पुन्य के धारी । तातैं हमको दरशन भारी ॥८॥  
 ऐसी जान पुन्य के काजैं । तिन जिन मंदिर पूजा साजैं ।  
 पहुँचन कीतौं सकती नाहीं । करै भावना अति हरपाहीं ॥९॥

दोहा-मानपोत्र पै जिन भवन चब दिस चार बखान ।

तिनको हम यहां जजत हैं अरघ आठ द्रव्य आन ॥१०॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबधिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वर्णं ॥१०॥

( इति मानुषोत्तरसंबधिजिनचैत्यालय पूजा समाप्त )

❀ अथ नन्दीश्वर दीप पूजन विधान ❀

अद्विल्ल छंद—

अष्टमदीपं नन्दीश्वर बहुं विस्तारहै । ताकेचव दिसं बावन गिरमनि धार है  
तिन सबपै जिनथान कहे बावनसही । सोइहां थापन थाप जजौं पुन्य कीमही

ॐ ह्रीं कार्ति कादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टान्दिकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु  
द्रापञ्चाशज्जिनालयान्यत्र अवतरत संनौषट् ( आह्वाननम् )

ॐ ह्रीं कार्ति कादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टान्दिकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु  
द्रापञ्चाशज्जिनालयान्यत्र तिष्ठत ङः ङः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं कार्ति कादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टान्दिकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु

द्राक्ष्याशास्त्रिजनालयात्पत्र भ्रमः सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं ।  
(पुष्पांजलि लिपेत्)

### अथ अष्टक ( बंद गोता )

शुभ नीर निरमल त्रस सुजियविन गंग धारा को सही ।

धर पात्र सुन्दर हाथ अपनै वचन करि मुख थुति कही ॥  
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुष को मौसर कहां ।

इमं जान नंदीश्वर तनै जिनथान जल जज हों इहां ॥२॥  
ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापश्चाशज्जिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वनं ॥२॥

लै बावनों गंध खानि चंदन नीरतैं घसि लाइयौ ।

कर कनक पातर धार लीनो महा उर हरपाइयौ ॥

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुष को मौसर कहां ।

इमं जान नंदीश्वर तनै जिनथान चंदन जज इहां ॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्योः संसारतापविनाशाय चंद्रमं नि० ॥३॥

बिन खंड अक्षत धवल उज्ज्वल बीन नव शुभ लायजी ।

कर सुभग जलतैं धोय नीकै बीनती सुख गायजी ॥

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुष को मौसर कहां ।

इम जान नंदीश्वर तनै जिनथान अक्षत जज इहां ॥४॥

ॐ १ नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति ।४.

सुखदाय पहुप सुगंध राशी वरन नाना जानिये ।

बहु घाटि धारी लाय करतैं माल कर हित मानिए ॥

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुष को मौसर कहां ।

इम जान नंदीश्वर तनै जिनथान पहुप सुजज इहां ॥५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥५॥

नैवेद पट रस तुरत लाकै सुभग मोदक हम लये ।

धर थाल कंचन धार करमै भावको निरमल ठये ॥

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुप को मौसर कहा ।

इम जानि नंदीश्वर तने जिनथान चरु जजहो इहां ॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो बुद्रोगधिनाशाय नैवेद्यंनिर्वपामीति स्वाहा  
मण दीपिका तम नाश करता जोतके धारक सही ।

लै आरती गुन गाय जिनके भावना इम उर लही ॥

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुप को मौसर कहा ।

इम जान नंदीश्वर तने जिन थान दीपक जज इहां ॥७॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०  
कर धूप दश विध गंध लेकै महा परमल दायजी ।

लै आपने कर माहिं श्रुतिकर अगनि में धरवायजी ।

तहा इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुप को मौसर कहा ।

इम जानि नंदीश्वर तनें जिनथान धूप जजौं इहां ॥८॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मन्धनदहनाय धूपं निर्व० ॥८॥

श्रीफल बदाम अनार खारक और पुंगीफल भले ।

इन आदि निरमल लाय फल हों देव जिन पूजन चले ।

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुप को मौसर कहां ।

इम जानि नंदीश्वर तनें जिनथान फल जज हो इहां ॥९॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो मोक्षफलभाप्तये फलं नि० ॥९॥

लै नीर चंदन तंडुला पुष्प और चरु दीपक कहे ।

धर धूप फलकर अर्घ करलै भावना भावत भए ॥

तहां इन्द्र सुरही जाय पूजै मनुप को मौसर कहा ।

इमं जानि नंदीश्वर तनैऽजिन थान अर्ध जजौ इहां ॥१०॥  
 ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यः स्नर्घपद्माप्तयेऽर्घं निर्वपामी० ॥ १० ॥

### ॐ अथ जयमाला ॐ

सौरवा-नंदीश्वर शुभ थान; अष्टम ताकी चौदिशा ।

बावन जिन थल मान, सो पूजौ कर आरती ॥१॥

बेसरीछंद-याही अष्टम दीप मझारा । जिन पूजन औवै सुर सारा ।

इम उतकृष्टी प्रतिमा जानौ । धनुष पांच से तंग बखानौ ॥२॥

रूप महा कौलों कवि गावै । जिन तन से सब लच्छन पावै ।

मुद्रा सांति घ्राण दिठ देखै । पद्ममासन कायोत्सर्ग पेखै ॥३॥

पूरब दिशा वा उत्तर भाई । श्रीजिन विंव तनै मुख पाई-

सौ सब विंव रतन मय होई । दीखै इम परतक्ष जिन जोई ॥४॥

बहु विस्तार धरे जिन गेहा । ताके लखत होय बहु नेहा ।  
 कटक बाग बन शोभा धारी । लग शिखर नभ मिलन पधारी ॥५॥  
 धुजा कल्प वृद्ध तोरण धारै । स्तन तूप मंगल द्रव्य सारे ॥  
 प्रातहार्य वसु शोभ अपारा । मणि मंडप नभ माहि सिधारा ॥६॥  
 नाटसाल तहां भक्त करवै । देव तहां नटि सुरधर गावै ॥  
 सुर म्यंदरि पंकति सुखकारा । तहां अमर धर्मकी उत्सारा ॥७॥  
 माहिमा तिनकी कबलौ गावै । जिन जानै कै जिन धुनि पावै ।  
 वासुर इन्द्र जाय सो जानै । वाकी तौ सामान्य बखानै । ८॥  
 जे जिन मंदिर गुमस्त भाई । पाप कट्टे पुन्य बंध कराई ।  
 तौ दरशनकी माहिमा सारी । कहै कौन फलकी विधि भारी ॥९॥  
 दोहा-तातै नदीश्वर विपै जे हैं जिनके थान ।



सो भव सुमरो श्रुति करो पूजो शुभ फल धाम ॥१०॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशब्जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामोति स्वाहा ।

ॐ आगे प्रत्येक दिशासंबंधी पूजा ॐ

तहां मथम पूर्व दिशा पूजा ( गीता ब्रंद— )

जाय नंदीश्वर सु अष्टम दीप की पूरव दिसा ।

लक्ष एक अंजन चार दधि गिरि आठ रतिकर गिर लसा ।

तिन ऊपरें जिन थान इक इक थाप सो इहां भायजी ।

हौं जजों मन वच काय भावन गात सकत न थायजी ॥१॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्रावतरतावतरत संवैषट् ।

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत

भवत षषट् सन्निधिकरणम् ।

( पुष्पांजलिं षषेत् )

## अथाष्टक (अद्विन्द्वल बंद)

निरमल जलहम लेयकनक पातरधरौ । अपनो तनजल धोय सपरकें सुधकरौ  
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानहैं । सोहों जलतैं जजौ महा थुतिआनहैं ॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशार्या त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजराभृत्युविनाशायजलं नि०  
चंदन आनि सुगंध भमर मन मोहनौ । करके भाव विशुद्ध पात्रलैसोहनौ ।  
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानह । सोहों चंदन लाय जजौ थुतिआनहैं ॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशार्या त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चन्दनै ॥३॥  
अक्षत उज्जल खंड विना लाए सही । धार मनोहर पातर अपने कर लही ॥  
नंदीश्वर पूरब दिश जे जिन थानहैं । सो अक्षत तैं जजौ भक्त विध ठानहैं ॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशार्या त्रयोदशजिनालयेभ्योऽच्चयपदमाप्तायाजतं नि० ॥४॥  
देव द्रुमके पुष्प महा गंध धारजी । तिनकी गूंथी माल आपकर प्यारजी ।  
नंदीश्वर पूरब दिसजे जिन थानहैं । सो पूजौ पुष्पलाय घनै तजिमानहैं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यः कामवाणविव्वंसनायतुष्पति० ॥५॥  
 नाना रस नैवेद भेद बहु लाइयौ । मोदक आदि अनूप कंठ गुण गाइयौ ।  
 नंदीश्वर पूरुब दिशजे जिन थानहैं । सो पूजौ नैवेद आप तजि मानहैं ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि त्रयोदश जिनालयेभ्यः क्षुद्रोगनिनाशाय नैवेद्यं नि० ॥६॥  
 दीपक मणमय, सार तासतें तम नसै । सो भर कंचन थाल हाथमेंसो लसै ।  
 नंदीश्वर पूरुब दिशजे जिन थानहैं । सो दीपक तै जजौं भक्त उर आनहैं ७  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहन्यकारनाशाय दीपं नि० ॥७॥  
 चंदन अंगर मिलाय धूप कीनी सहीसो लै अपनै हाथ अगनि माहीं दही  
 नंदीश्वर पूरुब दिशजे जिन थान हैं । सो पूजौ लै धूप हियै धर ध्यान हैं ॥८॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥८॥  
 श्रीफल लोंगेवदाम औरखारक सही इत्यादिक फलल्याय घालि प्रातस्मही ॥  
 नंदीश्वरपूरुब दिशजो जि नथानहैं । सोहोफलतें जजौंमहा थुतिगानहैं ६

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥६॥

जलचंदन अक्षत पुह चरु दीपक सही । धूप फला यह आठ अरघ इनकी लही  
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानहैं । सो मैं पूजों अरघ थीकी श्रुतिआनहै १०  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं नि० १०

प्रत्येक अर्घ । ( ऋडिन्ल बंद )

नंदीश्वर पूरब दिश अंजन गिर सही । ताऊपर जिनथान अर्कीर्तम पुनमही ॥  
जानैंको बल नाहि भावना यहां कैरैं । अष्ट द्रव्यतैं पूज आपनै अघहैं ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायामञ्जनगिरिसम्बन्धिजिनालयायाऽर्घं नि० ॥ १ ॥

याही अंजन गिरके पूरब दिससही । दधिगिर एक महान जहांजिन थलमही ।  
जानैं कौ बल नाहिं भावना यहां कैरैं । अष्ट द्रव्यतैं पूज आपनै अघहैं ॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशादधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायाऽर्घं नि० २  
अंजनगिरपूरबदिरावापिक मुखकहो । रतिकर गिर ता शीशथान जिनवरहो

जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरै ॥३॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वोच्चनगिरेः पूर्वदिशावापीसम्बन्धिप्रथमरतिकरस्यजिनालयायार्घ्यं  
 याही वापी के मुख रतिकर दूसरा। ताऊपर जिन भवत तीर्थ अघ मलहरा।  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरै ॥४॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वोच्चनगिरेः पूर्वदिशावापीसंबन्धिद्वितीयरतिकरस्यजिनालयायार्घ्यं  
 पूरवदिशाअंजन गिरकी दक्षिण दिशा। वापिक में दधगिरा तहांजिनथललसा।  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरै ॥५॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वोच्चनगिरेः दक्षिणदिशासंबन्धिवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धि-  
 जिनालयायार्घ्यनिर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

पूरब अंजन दक्षिण वापी मुखसही। रतकर प्रथम बखान तहां जिनग्रहमही  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरै ॥६॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वोच्चनगिरेः दक्षिणवापिकामुलप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घ्य नि०

५४  
 याही वापिक के मुख छुतिया रतिकराता ऊपर जिनथान महा पातिकहरा ।  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥७॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वाजनगिरेः दक्षिणवापिकाशुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं नि०  
 नंदीश्वर पूरब अंजन पच्छिमदिसावापिकं मधदधिगिरा तहां जिनथलबसा  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥८॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वाजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्ये दधिगिरिसंबंधि जि० अर्घं नि०  
 याही वापिक केमुख प्रथम सु रतिकरा । तापै जिनका भवन महा तीरथ घरा ॥  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥९॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वाजनगिरेः पश्चिमवापिकाशुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं नि०  
 दूजो रतिकर याही वापिक मुख कहौ । ता ऊपर जिन भवन अकीरतम बनहौ ॥  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥१०॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वाजनगिरेः पश्चिमवापिकाशुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं नि०

नंदीश्वर पूरब अंजन उत्तरसही । वापिक मध दधि गिरा तहां जिन थलकही ।  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः उत्तरदिशसंबंधिवापिकामध्ये दधिगिरिसंबंधिजि० अर्घ  
 याही वापिक के मुख प्रथम सु रतिकरौ । तोक ऊपर जिनकौ थानक अवतरौ ।  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥ २ ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः उत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधि जि० अर्घ नि०  
 याही वापिकमुखपर रतिकर दूसरा । ता ऊपर जिनगेह सकल पातिक हरा ।  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघहरै ॥ ३ ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः उत्तरवापि नाम्मुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घ नि०  
 ऐसे नंदीश्वर पूरब दिस गिरसही । तिन त्रयोदश पै इक इक जिन थल धुनिकही  
 जानै कौ बल नाहि भावना यहां करै । अष्ट द्रव्यते पूज आपनै अघ हरै ॥ ४ ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिश्येकांजनगिरिचतुर्दधिगिर्यष्टरतिकरे तित्रयोदशजिनालये

शुभो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

## ❀ अथ जयमाला ❀

दोहा- नंदीश्वर पूरब दिसा अष्टम दीप मभार ।

त्रयोदश जिनके थान हैं सो पूजौ श्रुति धार ॥११॥

बंदबेसरी- पूरब दिस नंदीश्वर माहीं । एक महा गिर अंजन पाहीं ।  
ढोलाकार गोल आकारा । श्याम रतन का है पिंड सारां ॥२॥

जोजन सहस चौरासी सारो । धरती तें नभ माहिं उचारो ।  
इतनें जोजन ही सुन भाई । है तिसैं व्यास भौम चौड़ाई ॥३॥

जेता त्वंग व्यास जे ताई । नीचै ऊपर इक सा पाई ।  
जाकी जोति सेवे भू व्यापी । नासकिया तम धर परतापी ॥४॥

महा मनोनि शिखर यह होनो । इसतें लख जोजन चक्कोनो ॥



अंतर एता जाय मुभाई । चव दिस चार वापिका पाई ॥५॥  
 सो वापिक भी भिन भाई । लाख-लाख जोजन बतलाई ।  
 ए लंबा विस्तार बताया । एताही तिन व्यास सुगाया ॥६॥  
 चौखूटी वापिक आकारा । कंचन पाल महा दृढ़ धारा-  
 मुख लौं जल भरया अति सोहै । चलें तरंग लखत मन मोहै ॥७॥  
 तिन चास्ति में विच विच जानौं । एक एक दधिगिर सुखदानौं ।  
 श्वेत वरण भाणि फटिक समाना । लंबे चौड़े इक से जाना ॥८॥  
 ए भी ढोलाकार वताये । दस दश सहस जोजना गाए ।  
 इनही इक इक वापी जानो । मुख पै दो दो रतिकर मानौं ॥९॥  
 ऐसे एक दिसाके भाई । त्रयोदस गिर गाये सुखदाई ॥  
 इन सब पै इक इक जिन थाना । सोहों जजौं छांडि सब माना ॥१०

दोहा—यह जिन मंदिर माल शुभ जो भव कंठ धराय ।

सो ता कीरत और कों सुर हरै जस गाय ॥११॥

ॐ ह्रीं नंदीर .रद्वीपस्य पूर्वादशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो पूर्णार्धं नि० स्वाहा ॥  
इति पूर्वदिशा पूजा समाप्त ।

ॐ अथ दक्षिणदिशा संबंधि जिनालय पूजा ॐ

चौगई-नंदीश्वर दक्षिण दिस जाय । त्रयोदश जिनके थान सुठाय ।

जान सकत तौ दीसे नाहि । ताँतै जजौं थाप इह ठाहिं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत  
संवापट् ( इत्याह्वानम् )

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत  
भवत वपट् सन्निधि हरणं । ( पुष्पाञ्जलिं क्षितेत् )

## ❀ अथाष्टक ❀

गीताब्द—नीर नीकौ क्षीर दधि सो जीव विन प्राशुक इसौ ।

धर कनक भारी माहिं करले कहौ गुन मुख बुधि जिसौ ॥

जिन थान दक्षिण दिसनंदीश्वर तहाँ विव जिनराय हैं ।

सौं जजौं मन वच काय सुध तें लाय जल सुखदाय हैं ॥१॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशायाः अंजनगिरी चत्वारिदधियर्ग्यष्टरतिकरेतित्रयोदश  
जिनालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

घसिं नीर चंदन बावना शुभ गंध की धारा सही ।

लौं सुभग पातर विनय सेतीं जानके तीरथ मही ॥

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहाँ विव जिनराय हैं ।

सौं जजौं मन वच काय चंदन लायके थुति गायहैं ॥२॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो बन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा ॥२॥

अक्षत सु उज्ज्वल खंड नाहीं शुद्ध नख सिख जानिये ।

फिर धोय निरमल धार पातर आपनै कर आनिये ।

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहाँ बिंब जिन रायँह ।

सो जजौँ मन बच काय शुद्धकर अखत तँ हित लायँह ॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्योऽत्तं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

फूल प्रासुक कनक चाँदी तथा सुर तरु के सही ।

लै माल तिनकी करी चित दे आपनै करमें लही ।

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय है ।

सो जजौँ मन वचकाय फूल सु लाय आति सुख पायँह ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नैवेद्य सुन्दर सुभग रसना लाइया हित कारने ।

ले आपनै कर धार पातर भूल के मद मारने

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां विंवि जिनराय हें ।

सो जजौं मन वचकाय सुधि नैवेद्य शुभ गुन लाय हें ॥५॥

ॐ हीं नदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकत्रंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो चतुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीप माणिमय अंध नाशक महाजोत धरा सही ।

धर भले पातर आरती शुभ आपनै करमें लही ।

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहा विंवि जिनराय हें ।

सो जजौं मन वच काय सुढ कर दीप तें जसगाय हें ॥६॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकत्रंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

कर धूप दिस विध गंध लैके पीस सकल मिलायजी ।

हौं आपने कर हरप धरकें अगनि खेवन आयजी ॥

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हूँ ।

सो जजौं मन वचकाय सुधतैं धूप सू जिन पाय हूँ ॥७॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकञ्चं मनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामोति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल वदाम सु ले सुपारी खारका सुख दायना ।

इन आदि और अनेक फलले सुभग सब मन भायना ।

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हूँ ।

सो जजौं मन वचकाय शुभ तैं आयकर फल लाय हूँ ॥८॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकञ्चं मनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामोति स्वाहा ॥८॥

जल गंध अक्षत पुष्प चक्र ले दीप धूप फला सही ।

कर अरघ सब द्रव्य एकठे करि आपनै कर में लही ॥

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हूँ ॥६।

सो जजौं मन वंचकाय शुभकर अरघतें थुति गाय हूँ ॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकञ्जनगिरिचत्वारिदधिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

ॐ अथ प्रत्येक अर्घं ॐ

गीता छद्—नंदीश्वर दक्षिण दिसा को जान अंजन गिर सही ।

तिस ऊपरै इक थान जिन है पाप हरने की मही ॥

तहां देव ही तो जाय पूजै और को मौसर कहां ।

इम जानि पुन्य के लोभ काजै भाव अरघ जजै इहां ॥१॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाजनगिरिसंबंधिजिनलयाय अर्घं निर्वपामीति ॥१॥

द्वीप दक्षिण दिस नंदीश्वर अंजन गिर पूरब मही ।

लखि वापिका मध शिखर दधि मिर तास पै जिनथल सही ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालया-  
यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

इसही जु वापिक तन मुख पै जानि रितिकर आदि जी ।  
ता ऊपरै जिन थान है शुभ जजै सब अघ वादिजी ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेः पूर्ववापिकामुखमथरतिरुसंबंधिजिनालया-  
यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

याही जु वापिका तना रतकर दूसरा गिर जानिये ।  
ता ऊपरै जिन थान तीस्य आकिरतम ध्रुव थानिये ॥तहां०॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेः पूर्ववापिकासंबंधिजिनालयायार्धं नि०॥४॥

अँजन गिर दक्षिण दिसाका तास की दक्षिण मही ।  
है वापिका मध्य शिखर दधिगिर तास पै जिनग्रह सही ॥तहां०॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेः दक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालया-  
यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥



याही तु वापिक मुख सु ऊपरि कही पहिला रतकरा ।

ता ऊपरें जिन भवन दीर्घ किये पापन का हरा । तहा ० ॥६

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनाल-  
यायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

वापिका इस तनै मुख पै कहा रतिकर दूसरा ।

तिस शीश थानक जिनेसुर का देखतें पातक हरा । तहां ॥७॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिना-  
लयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

दक्षिणदिस अंजन गिरीकी पच्छिम दधिगिर वापिका ।

तहां थान देव जिनेंद्र जू का करो भय तिन जापिका । तहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनाल-  
यायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

इस वापिका के मुखै रतकर नाम प्रथम सुगिर सही ।

तिस ऊपरे जिन भवन अघहर सकल मंगलकी मही ॥तहां० ॥

ॐ ही नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पच्छिमवापिकाष्टखमयरत्तिकरसंबंधिजिनाल  
यायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

दक्षिण अंजन पच्छिम वापिक मुख करै रतकर हुंजा ।

ताके सु ऊपर भवन जिनको एकही धर्मकी ध्वजा ॥तहां०॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकाष्टखद्वितीयरत्तिकरसंबंधिजिना  
लयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा॥ १० ॥

दीप नंदी दक्षिण अंजन तास उत्तर वावरी ।

ता मध्य दधिगिर सीस जिन थल भव्य संग मंगल करी॥तहां ११

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिशिरसंबंधिजिनालयायार्धं

या वावरी मुख जान रत्तिकर प्रथम ही मुख दायजी ।

ताके सु ऊपर जोय मंदिर देव जिनका पायजी ॥तहां० ॥१२॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालया-  
 यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

इसही जु वापिक नोक ऊपर जान रतिकर दूसरा ।

तिस जाय मस्तक भला राजै देव जिन मंदिर धरा ॥तहां० ॥१२॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालया  
 यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

अडिल्ल छद—दक्षिण अंजन दधिगिरि चव वसु रत करा ।

इन पै इक इक थान देव जिनका खरा ।

तहा देव ही जजै जाय गुन गाय हैं ।

हम इहां पूजै अर्ध भावना भाय हैं ॥१४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणादिशायाःएकअंजनगिरिचत्वारिदधिमुखाष्टरतिकरेतित्रयो-  
 दशजिनालयेभ्यो महार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

## ❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—नंदीश्वर दक्षिण दिसा कहे सु जे जिन गेह ।

हम पूजै भौं यहां सुर जज है कर नेह ॥१॥

बेसरी छंद—नंदीश्वर तौ दीप अपारा । ताकी दक्षिण दिस सुख कारा ।

अंजन गिर तौ एक बताया । ता ऊपर चवं वापिक भाया ॥२॥

तिन वापिक के मध्य अनूपा । एक एक दधिगिरि शुभ रूपा ।

तिन वापिन की नौकन ठाहीं । दोग दोग रतिकर गिर पाहीं ॥३॥

तुंग व्यास रचना है तैसी । पूर व दिसा कही थी जैसी ।

यहां वहां फेर रच नहिं जानौं । दिसा विशेष और नहिं मानौं ॥४॥

यह सब थान तीर्थ है जोई । देखत दरस पाप क्षय होई ।

नाम लिखै जिय मंगल पावै । सौ पूजन माहिमा कर्म गोंव ॥५॥

या पूजा फल तें सुन भाई । शोक दोष उपजै न कदाई ॥  
 सकल ब्याधितनकी मिटजावै । जो जिय यह पूजा मन भावै ॥६॥  
 याही पूजा के पर भावा । सिरीपाल तन कुष्ट गमावा ।  
 सो आतम सुरके सुख पावै । जो जिय यह पूजा मन भावै ॥७॥  
 होय फेर चक्री बलभदा । कामदेव आदिक सुखहदा ॥  
 कै शिव वा अहमिंदर जावै । ते जिय यह पूजा मन भावै ॥८॥  
 फेर चवै मोटे पद पावै । राज्य भोग फिर तप मति लावै ।  
 काट कर्म शिव रूप कहवै । ले जिय यह पूजा मन भावै ॥९॥  
 और कहा फल आधिक सुभाई । तातैं नंदीश्वर चल जाई ॥  
 जो जग फेर न आवै जावै । ते जिय यह पूजा मन भावै ॥१०॥  
 दोष—तेरह गिर पै जिन्न भवन तेरह ही मन लाय ।

नंदीशुर दच्छिन तरफ सोहम भाव जजाय ॥११॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासंबंधित्रयोदशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वारा  
इति दक्षिण दिसा पूजा संपूर्ण ।

## ॐ आगौ पश्चिम दिसा संबंधि जिनालय पूजा ॐ

चौपाई-नंदीश्वर पच्छिम दिस जोय । त्रयोदश जिन मंदिर हूँ सोय ।  
तहां जान तौ समरथ नाहिं । यहां थापन करजौं सुठाहिं ॥

ॐ हीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्दिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिम-  
दिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरन अवतरत संबोपट्आहाननम्

ॐ हीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्दिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिम-  
दिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ हीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्दिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिम-  
दिशि त्रयोदशजिनचैत्यालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत सन्निधिकरणं ॥

## ❀ अथाष्टक ❀

चौपाई—नीकीनीरं निरमलो सारं । निरमल पात्रं करमें धारं ।  
 नंदीश्वर पच्छिम दिसेजानं । पूजों जिन मंदिर जल आन ॥३॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलंनि०  
 चंदन चारु अगर घसि औरं । कनक पियाले धर कर जोर ।  
 नंदीश्वर पच्छिम जिन थानं । सो मै जजों गंध शुभ आन ॥४॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापवित्तशाय चंदनंनि०  
 अक्षत सुकताफल से सारं । उज्जल खंड रहित कर धारं ।  
 नंदीश्वर पश्चिम दिस जानं । जिन थल पूजों अक्षत आनं ॥५॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अन्नयपदमाप्तये अन्नतान् नि०  
 फूल कल्प तरु से गंध धारं । नाना वरन आनि कर सारं ।  
 नंदीश्वर पश्चिम जिन थानं । पूजों फूल थकी हित आन ॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यः क्रामवाणविध्वंसनाय पुष्पनिं  
नाना रस नैवेद वनाय । तुरत क्रिये लाग्रो श्रुति गाय ।

नंदीश्वर पच्छिम जिनथान । सो पूजौ नैवेद सुआन ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो तद्द्रोगविनाशाय नैवेद्यनिं

दीपक रतन मई तम हरा । सो हमने शुभ पातर धरा ।

नंदीश्वर पच्छिम जिन थान । सो मैं जजौ दीप शुभ आन ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपंने

धूप कपूर अगर मिलवाय । कीनी भली गंध जुत लाय ।

नंदीश्वर पच्छिम जिन थान । सो मैं पूजौ धूप सुभ आन ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे परिचमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मरहनाय धूपं निं ॥ ७ ॥

श्रीफल सार बदाम अनूप । खारक पुंगीफल लै भूप ।

नंदीश्वर पच्छिम जिन थान । सो मैं पूजौ शुभ फल आन ॥ ८ ॥



ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलमाप्तये फलं नि० ॥८॥

जल चंदन अक्षत पुह जेय । चरु दीपक फल धूप सुलेय ।

नंदीश्वर पच्छम जिन थान । सो मैं जजौं अरघ पुन्य दान ॥९॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अनर्घपदमाप्तये अर्घं नि० ॥९॥

आगे प्रत्येक अर्घ ।

चाल जीगीरासे की

नंदीश्वर पच्छम दिस जानों अंजन गिर शुभ थानों ।

ताकें शीस विराजित ऊपर श्रीजिन मंदिर जानों ॥

जानैं को नहीं सक्त हमारी अरु पूजन मन भाई ।

तातें मन वचकाय शुद्ध तें अरसू जजौं शिवदाई ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमजिनगिरिसंबंधिजिनालयायार्धं निर्वणमीति स्वाहा ॥१॥

याही अंजन गिर की पू ख दिसा वापिका जानों।

ता मध दधिगिरि ऊपर जिन थल तीरथ अघको हानौं जानै ० ॥२॥  
ॐ ही नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्ध नि०  
पच्छिम अंजन गिरिकी पूर बवापिक के मुख भाई ।

हे रतिकर गिर जिन थल तापै पूजै देवा आई । जानै ० ॥३॥

ॐ ही नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयायार्ध नि०  
इस ही वापिक के मुख ऊपर है रतिकर मुख दानौ ।

ताके सीस कहौ जिन मंदिर पाप हरन को थानौ । जानै ० ॥४॥

ॐ ही नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्ध ४  
पश्चिम अंजन गिरिकी दक्षिन वापिक के मध्य जोई ।

हे दधिगिर तिस नाम सीस पै जिनको थानक सोई । जानै ० ॥५॥

ॐ ही नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्ध ५  
याही वापिक के मुख जानौ रतिकर पहिला होई ।

तापै जिनजीका है मंदिर पूजन जोग्य सो जोई ॥जनै०॥६॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिर्मानगिरिदक्षिणवापिकासुखथपरति करसंबंधिजिनालयायार्ध  
इसही वापिक के सुख ऊपर रतिकर हुआ जानौं ।

ता ऊपर है श्रीजिनमंदिर पूजत जे धन मानौं । जनिको ०॥७॥  
ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिर्मानगिरिदक्षिणवापिकासुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्ध  
नंदीश्वर पच्छम अंजन गिर ता पच्छम की वापी ।

ता मध दधिगिर ऊपर जिन थल पूजै हरि सुर थापी ॥  
जानै को नहीं सकु हमारी अरु पूजन मन भाई ।

तातें मन बचकाय शुद्ध तें अरघ जजौं शिवदाई ॥८॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिर्मानगिरिपश्चिमथाकामध्दधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्ध  
इस ही वापिक के सुख जानौं पहला शतकर भापा ।

ताके ऊपर है जिन थानक सुंही पूजै जाला ॥जनै०॥६॥

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमत्रापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयार्थनि०  
या वापिक के ही मुख जानौं दूजा रतकर नीका ।

ताही के शिर है जिन थानक पाप हरत हैःजिकं॥जनि३०  
ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयार्थ

नंदीश्वर पश्चिम दिस अंजन ताकी उत्तर जानौं ।  
है वापिक मध्य दधिगिर परवत ऊपर जिन थल मानौं॥जनि०११

ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनालयार्थनि०  
इस ही वापिक के मुख आगे रतकर परवत पावे ।

ता ऊपर जिन थान कहो है सो पूजै मुख दावे॥जनि० ॥१२॥  
ॐ हीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयार्थ

वापिक इसही के मुख आगे रतकर गिर मुख थानौं ।  
याके ऊपर है जिनजीको मंदर अति मुख दानौं॥जनि०॥१३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकाष्ठस्रद्धितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्धः

नंदीश्वर पच्छम दिस त्र्योदश हैं परवत मणि जैसे ।

तिन सब पै जिन मंदिर जानौं पाप हरण थल ऐसे । जानें । १४ ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पश्चिमांजनगिरिसंबंधित्रयोदशजिनालयेभ्योऽर्धं महाद्यं नि०

❀ अथ जयमाला ❀

दोषा—नंदीश्वर पच्छम दिसा हैं त्र्योदश जिन गेह ।

कनक रतन भय सोहनों जजैं देवकर नेह ॥१॥

बेसरी छंद—पच्छम अंजन गिरको भाई । आदिक हैं तेरह गिर ठहीं ।

तिनपे हैंजे जिनकेगेहा । तिन पद नमैं आनि सुर नेहा ॥२॥

या पूजा फल दुःखको खोवै । या पूजा फल अघ मल धोवै ।

और पुरुष की कथा सुकेहा । जिन पद नमैं आनि सुर नेहा ॥३॥

पूजा करै है भव सोई । पूजाफल चउ गति नहिं होई ।

इस पूजन फल सुर हुम जेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥४॥  
जे भव नंदीश्वर को जावें। पच्छिम दिसको प्रीत बढावें।  
तहां कहे त्रयोदश जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥५॥  
या पूजा जग में न भभावै। या पूजा फल ज्ञान बढावै।  
पच्छिम नंदीश्वर जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥६॥  
इत जिन थान पूज ते ठानें। तिनको तीन भवन बढ जाँनैं।  
भावत हैं हम तो जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥७॥  
ए जिन भवन देखते भाई। लहै पुन्य अघ तुस्त नसाई।  
पूजे जो भव धरै न देहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥८॥  
हम भी पूजनको फल चाहैं। अरु पूजन की भावन भावैं।  
हम तहां जजैं सु औसरहै यहां। जिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥९॥

यह नदाश्वर पाच्छम थाना । जिन पद नम । तन पुन्यथाना ।  
 हीन संक धर लखै नं जेहा । जिन पद नमै आन सुर नेहा ॥ १० ॥  
 सुर जो पूजे वांखारा । जो जो अवसर आवै सारा ।  
 मनुष विचारो पहुँचै केहा । जिन पद नमै आन सुर नेहा ॥ १० ॥  
 कव नंदीश्वर अवसर आवै । जव इस थल हभ भावन भावै ।  
 जाकर ही पुन्य पावै जेहा । तिन पद नमै आनि सुर नेहा । १२

सोरठा— जो वहां के जिन थान, पूजों पद वसु द्रव्यतै ।

सो लह अवचल ज्ञान, लोकालोक प्रकाशका ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुभे शुभलपक्षेऽष्टान्दिक्कामहामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे  
 पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यः पूर्णार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति पश्चिम दिशा पूजा समाप्त ।

❀ अथ नंदीश्वरद्वीपकी उत्तरदिशा की पूजा ❀

पद्मरी षंड ।

नंदीश्वर उत्तर दिश्यजान । त्रयोदश जिन थानक सुभ बखान ॥

सो जजों थाप इस ठाम सोय । नहिं वहां जानकी साक्ति मोय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र ऋवतरत ऋवतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापने ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र मम संनिहितानि भवत भवत

सन्निधिकरणम् ( पुण्याब्जलि निक्षिपेत् )

❀ अथाष्टक ❀

चौर जिनंदकी चाल—

जलले गंगा नारको जी-निरमल तरसन पार

सुभग पात्र धर लाइयौजी पूजनको जिन पाय ।



उत्तरदिश जिन थानजी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं  
चंदन बावन नीरतें जी घृसि कर पातर धार ।

तई अरघ कर आपनैजी पूजन जिन भव वारि । उत्तर ॥२॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदननि०  
अक्षत सार सुहावनाजी मुक्ता फलसे जोय ।

खंड विना शुभ वीनके जी पूजों जिन पद सोय । उत्तर ॥३॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अचायपदपाप्तये अचातान्नि०  
फूल मनोहर गंधकाजी वरन भले सुखकार ।

कल्प वेलसे लाइयां जी पूजन जिनपद सार । उत्तर ॥४॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः कामवाणनिध्वंसनाय पुष्पनि०  
नाना रस नैवेद लेजी मोदकादि वनवाय ।

पातर शुभमें घालिकेजी जिनके पूजों पाय ॥ उत्तर० ॥५॥  
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो त्रुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यनि०

दीपक मणिमय सोहनाजी भली जातिके धार ।

तिनकी कर शुभ आरतीजी, पूजों जिनपद सार॥ उत्तर० ॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोहन्यकारविनाशाय दीपनि०

धूप करी शोभा मईजी, अगर चंदना लाय ।

सकल पीस इकठी करीजी, पूजन को जिन पाय । उत्तर० ॥७॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मन्वनदहनाय धूपनि०

श्रीफल लौंग वदाम लेजी खारिक पिस्ता लाय ।

पुंगी फल आदिक फलों तैं पूजों जिनके पाय ॥ उत्तर० ॥८॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥९॥

जल चंदन अक्षत सही जी पहुप भले नैवेद ।

दीप धूप फल अर्घ लेजी पूजौं जिन निरखेद ॥ उत्तर० ॥६ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अनर्घपदपाप्तये अर्घं नि ॥६॥

अथ प्रत्येक अर्घ । ( अद्विल्ल लंद )

नंदीश्वर उत्तर दिशगिर अंजन सही । ताके ऊपर है जिन थानक पुन्यमही ॥

सुर तौ परतछ जाय जजै जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं नि० ॥ २ ॥

या अंजन गिर पूरव्वापी है सहीता मध दधिगिर सीम थान जिनशुभमही ॥

सुर तौ परतछ जाय जजै जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिशांजनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनोत्तयायार्घं

इस ही वापिक के मुख रतकर जानियेतापै है जिन भवन महा पुन थानिये ॥

सुर तौ परतछ जाय जजै जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पूर्वदिशवापिकामुत्तमथपरति रुर, संबंधिजिना०

इस वापिक के ही मुख जानौं रत्कराता ऊपर जिन थान सकल पातक हर ॥  
 सुर तौ परतछ जाय जैँ जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघजजैँइहां ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपूर्ववापिकासुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्ध  
 उत्तरनंदीश्वर अंजन दक्षिण सही । वापिकमधदधिगिरिऊपरजिनथलमही ॥  
 सुर तौ परतछ जाय जैँ जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघजजैँइहां ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःदक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्ध  
 या वापिक के मुख ही रत्कर गिर सही । ता ऊपर जिन थान अर्कातमशुभमही  
 सुर तौ परतछ जाय जैँ जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघ जाजि हैँइहां

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकासुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनाल  
 यायार्ध निर्वपामिति स्वाहा ॥६॥

या ही वापिक के मुख रत्कर दूसरा । तापै जिनका थान महा शुभ तें भरा ॥  
 सुर तौ परतछ जाय जैँ जिन पद तहां । हम तौ भावन भाय अरघजजैँइहां  
 ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकासुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनाल-

यायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥  
 उत्तरं अंजनं गिरकी पच्छमं जानियो वापिक मधदधि गिरपै जिन थलमानिषे  
 सुर तौ परतच्छ जाय जजै जिन पद तहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैं इहां

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपश्चिमवापिकामध्यदधिरसंबंधिजिनल  
 यायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

या ही वापिककेमुख ऊपर रतकरो । तापै जिनथानक है सो हम अघहरो ॥  
 सुर तौ परतच्छ जाय जजै जिन पदतहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैं इहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपश्चिमवापिकामुलमथपरतिकरसंबंधिजिना  
 लयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

इसही वापिककेमुखजानो रतकरा । तापै जिनकोथान भविनको अघहरा  
 सुर तौ परतच्छ जाय जजै जिन पदतहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैं इहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपश्चिमवापिकामुखद्वितीपरतिकरसंबंधि जिना  
 लयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

नंदीश्वर उत्तर अंजन उत्तर सही । मध्यवापिका दधिगिरपै जिनथलमही ॥

सुरतौ परतच्छ जाय जजै जिन पद तहां । हमतौ भावन भाय अरघजजहँइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकास्यदधिमिरिसंबंधिजिनालया-

यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

इस ही वापिककेमुखऊपरहै सही । रतिकर के सिरऊपर जिन थलकी मही ॥

सुर तौ परतच्छ जाय जजै जिन पदतहां । हम तौ भावन भाय अरघजजहँइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकास्यदधिमिरिसंबंधि जिनल-

यार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

याहीवापिकमुखऊपर रतकर कहा । तापै जिनथल जान हरप मन में लहा ॥

सुर तौ परतच्छ जाय जजै जिन पदतहां । हमतौ भावन भाय अरघजजहँइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकास्यदधिमिरिसंबंधिजिना

लयायार्धं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

नंदीश्वर उत्तर दिसकोइस जानिये । त्रयोदशजिनके थान महा पुन्य खानिये

सुर तौ परतच्छ जाय जजै जिन पदतहां । हमतौ भावन भाय अरघजजहँइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसंबंधित्रयोदशचौत्यालयेभ्यो महार्घं ॥१४॥

### ❀ अथजयमाल ❀

दोहा—नंदीश्वर उत्तर दिसा कहे, जिनेश्वर थान ।

तिन की युति भांपूं सही, करो मोहि अघ हानि ॥१॥

बेसरी छद्द—नंदीश्वर उत्तर की जानों । है जिन भवन पाप हर थानों ।

पतरछ तौ जहां अमराजावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥२॥

देवन को मौसर है भाई । करें वीनती भक्ति उपाई ।

ताके फल सिव मांग पावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥३॥

मुनि गणधर को मौसर नाहीं । दरसन नंदीश्वरके माहीं ।

तौ औरन की को मुख गावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥४॥

इन्द्रन की सक्ती है भारी । और देव सब पुन्य अधिकारी ।

नंदीश्वर जप पूज करावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥५॥

नंदीश्वर उत्तर को जानौं । पूजै फिर जिन जी को थानौं ।  
 ते या भव में उच्च कहावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥६॥  
 सफल भवांतर तव ही मानौं । जब होवे नंदीश्वर जानौं ।  
 पूजै जिन अर पुन्य बढ़ावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥७॥  
 थ्यौं तौं विनती हम इम ठानैं । देव जिनेश्वर गुणकर गानैं ।  
 अहो देव सब अंतर पावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥८॥  
 अवं जिन देव करो विधि ऐसी । नंदीश्वर पूजे जिन जैसी ।  
 औरं घनी मुख कव लौं गावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥९॥  
 दीन दयाल भाव की जानौं । तातैं कहै न परै कहानौं ।  
 मनासा पूरी कर कवि गावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥१०॥

दोहा—ऐसी विनती करन कौं, मनसा रहै अपार ।

नंदीश्वर कव जाय हम, उर की करै पुकार ॥ ११ ॥



ॐ हीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्हिकामहोत्सवे नंदीश्वरदीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्धं निर्वपामीति स्वारा ॥  
इति उत्तर दिशा पुजा ।

## ❀ अथ समुच्चय आरती ❀

दोहा—अष्टम दीप नँदीसुरा, उत्तम तीरथ थान ।  
मनुष देह पहुंचे नहीं, पूजें सुर पुन्यवान ३॥

ताकी गुण माला कहौं, सुनौ संत धर भाव ।  
जा सुनि वहाँ चलनौ चहे, बड़े राग चित चाव ॥२॥

\* मृणयणानंद की चाल \*

दीप दधमाला की कथा सुखदाय है । सुनै उर धरै तब ज्ञान बहु पाय है ।  
दीप जंबू पहल लाख जोजन मही । मेर इक तास मध और रचना कही ॥३॥  
तास को वेढि गिर चार दधि जानियै । ता विपै दीप वहु देव खग थानियै ।  
आदि दिग चारु रचना घनी है सही । व्यास दो लाख जोजन लखोजिन कही

धातकी खंड पूजा गिरद भायजी । मेर जुग पूर्व पञ्चम धरा पायजी ।  
चार लाख जोजना व्यास विस्तार है । और रचना धनी सुरत उनहार है ॥५॥  
आठ लाख जोजना समुद कालोदया । ता परै तीसरा दीप पुहकर सधा ॥  
धीच ताके कहा मानपोत्तर सही । व्यास षोडश लाखौ जोजना धुनि कही ॥६॥  
मेर जुगही कहे अर्ध पुहकर धरा । पूर्व पञ्चम दिशा अधिक माहिमा करा ॥  
चार लघु मेर यह सहस चौरासिया । त्वंग पन जानि इम और धुनि भापिया ॥  
ता परै तीसरा समुद आवै बड़ा । लाख वतीस जोजन सुरत में पड़ा ॥  
दीप चौथा जुजन लाख चौंसठ सही । समुद चौथा तनौ व्यास मुनि अवरही  
लाख इक सौ अठइस जोजन कहा । पञ्चमा दीप विस्तार मुनि इम चहा ॥  
छपन अधिक लाख दोग्य सल होय जी पांचमें जलधिकी कथा कहीं तोहिजी  
पांच सै लाख अरु अधिक वारा सही । दीप पष्टम सहस लाख चौबिस कही ॥  
धीस हे लाख अरु अधिक अइतालजी । जान इम समुद पष्टम जलापालजी  
लाख चलीस सै अधिक छिनवै गिनौ । सातमौ दीप विस्तार जिन इम मनौ ॥

लाखं इक्क्यासि सै अधिक लख बानवै। सातमें समुद्र को व्यास इम जानवै।  
 एक सै त्रैसटः केाटि मन लाइये । अधिक लख और चौरासिया गाइये ॥  
 दीप अष्टम तनो इतो विस्तार जी। जान इम डुगुन डुगुनौ सबै सार जी ॥ १२ ॥  
 दीप अष्टम विषै चार ही दिस सही । चार अंजन गिरा स्याम माणिमय कही ॥  
 चापिका चार दिश जानि पोडश बड़ी। बीच तिन सवन के दधिगिरा लखमड़ी  
 वापिका सकल जल खानि चव कूटकी । रतकरा तिन विषै जुगल जुगं खूटकी  
 सकल रतिकर गिनै होय बत्तीस जी। सबै गिर मेल होय वांवना दीस जी १४  
 सीस सब ही तनै गेह जिनें राय हैं । जजै भव जीवके सधै सब काज हैं ॥  
 गेह बावन सकल कनक रतना जड़े। बिंब जिन देव के अधिक उपमा भरे ॥  
 मास कातिक तथा फाग मन लाय जी। जानि आंसाढ़ इन सुकलपक्ष पायजी ॥  
 इन दिना इंद्र सब देव संग लाय कै । जाँय नंदीश्वरे दीप हरषाय कै ॥ १६ ॥  
 एक इक इंद्र दोय दोय पहरौं सही । एक दिस पूज जिन पदन को तिस मही ॥  
 च्यार हर इमें जिन पूज्य वसु दिन करै । शेष सुर सकल मुख शब्द जय उच्चरै

भक्तों भोगुन गान जिन गाय है । तासं फल ही सकल पाप को दाहि है ॥  
 एक भ्रम पायकै मोक्ष जावै सही । भक्त जिन देव फल देय जिन धुनि कही ॥  
 देव विन मनुप तौ जाय नहीं कोय जी । देवही तीन रित जजै मद खोय जी ॥  
 और भी दिनन मँजात सुर सेवकों । नचै बहु गान कर जजै जिन देव को ॥  
 नंदीश्वर जाय जिन पूजते देव भी । भास यहां पुन्य द्रव्य सो नहीं केव भी ॥  
 इन तनीक्य इस वात आब्धी बनी । मोक्ष मग नय थकी मुनुप की शुभ गिनी ॥  
 धन्य है जीव जे जाय नंदीश्वरा । जजै जिन पाय थुति गाय पातिक हरा ।  
 वीनती यह जिन देहि ओसर इसौ । जाय उस दीप प्रभु पाय पूजै तिसौ ॥ २१  
 और नहीं चाह जिन सेव विन पाइये । रहे निश दिन इसी प्रभु गुन गाइये ॥  
 मोक्ष नहि वने इम सेव तुम दे भली । वीनती सुनो जिन दया निधि सुखरली ॥

दोहा—नंदीश्वर जिन गेह की, माल धरै गुन जेह ।

भली“ टुक,, ताकी भई, पूजे जिन कर नेह ॥ २३ ॥

कवहू“ टुक,, निवार अध, पूजत है तुम पाय ।

ता फल मंगल संपन्न, जय जय जय जिनराय ॥  
 ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिजिनालायेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति नन्दीश्वर पूजनविधान समाप्तम्

❀ चिक जाने पर हम न सुनेंगे न जवाब ही देंगे ❀

क्यों कि अब बहुत थोड़ी ? प्रतियौरह गयी है । बहुत मोटे कागज पर बम्बई निर्णय सागर के बड़े टाइप में छपे ग्रंथ व पुस्तकें जो कि विक्रि जाने पर इसकी दूनी कीमत में भी न मिलेंगी । कमीशन काट कर जल्द मंगा लेंगे । नहीं तो पीछे पड़ताना होगा ।

पद्मनंद पंचविंशतिका हिंदी अनुवाद सहित शास्त्राकार बड़े साइज के पृष्ठ संख्या ५३० न्योछावर मय गर्तों के ५)

भद्रबाहु चरित्र—भाषानुवाद सहित — ॥=) धन्यकुमार चरित्र—भाषानुवाद — ॥) तत्त्वार्थसूत्र - मूल और भाषाछंदसहित, (१)

पं० छोटेलाल कृत मोक्षशास्त्र—( तत्त्वार्थसूत्र ) मूल शुद्धपाठ —) ॥

चारुदत्त चरित्र चौपाई बंद सिधई भारा मल कृत तथा वेश्यानिषेध की लावनी भी है । कपड़े की जिल्द सहित १) सार्दी १)

नेमिचन्द्रिका—प्राचीन आसकनकृत दूसरी आवृत्ति २) ॥

वारहभवनसंग्रह—छ कवियों की बनाई भावनाओंका संग्रह ३) ॥

अष्टाहिकावत कथा और रासा—भाराधनापाठ ४) ॥

सम्मोदशिवरमाहात्म्य—पूजनसहित

जव (हरलालकृत सचित्र

भक्तान्न स्तोत्र—संस्कृत और भाषा— -)

पंचमंगल—रूपचन्द्रकृत शुद्धपाठ— - -)

समाधिमरण दोनों—पं० सुरचन्द्र और

द्यानतरायकृत

सम्मोदशिवरका फोटो—तस्वीरमें रखनेका—)

राजुलपचीसी—विनोदीलाल कृत— - -)

बाजुलपचीसी—और नेमिराजुलकेप्रश्नोत्तर

की बारहमासी

निर्वाणिकांड—आकृत और भाषा महावीर

स्वामी की पूजा सहित

नर कृतुप्त कथन - भूदरवास कृत

गुर्यांगली—और मंगलाष्टक वृंदावनजी कृत)।

अठारहनाते—छंद और वचनिका कुन्दलाल

तथा भूरदास कृत शिवा जगदी भा है )।।।

चौबीस तीर्थकारोंके ५४ चिन्होंकी

लावनी सहित

साधुचन्दना—पं० बनारसीदास और

भूदरदास कृत

शिवपचीसी—और तेरह काँठिया

ज्ञानपचीसी - और धर्मपचीसी

मुनिराज का बारहमासा—ज्योतिषी जियालाल

कृत - )।।

शारदा अष्टक—और शास्त्रभक्ति समेत

आलोचना पाठ—कठिन शब्दों पर टिप्पणी

सहित

चेराग्यभावना—और समाधि भरण

अद्वैतत्रिध्यान—( पार्वनाथस्तुति ) दूसरी

भूदरदास कृत स्तुति

वागए भावना—मुन्शी मंगतराय कृत

निशिभोजनकथा - निशिभोजननियेयक

लावनी समेत

ऊपरकी इकतीस पुस्तकोंमें से एक किसयकी ? लेनेसे ६ और १० लेनेसे १३ दी जावेगी ।

\* दूसरोंकी नई छपाई पुस्तकें । \*

पद्मपुराण—( सचित्र ) श्री रविप्रेणाचार्यके संस्कृत महाभू ग्रन्थकी स्व० पं० दौलतरामजी कृत सरल विस्तृत भाषा वचनिका । इसमें ५ चित्र हैं । ए० १००० मू० ११)  
रत्नकण्ड श्रावकाचार—स्व० पं० सदासुखदासजीकृत भाषा वचनिका । इसमें श्रावका-  
चारका बड़ी ही सरल रीतिसे वर्णन है । की० ६)

शान्तिनाथपुराण—( सचित्र ) भट्टारक सकलकीर्ति कृतकी पं० लालारामजी कृत  
भाषाटीका । पृ० ४०० मू० ६)

त्रैवर्णिकाचार—भट्टारक सोमसेन कृत मूल व मराठी टीका । मू० ३) हिन्दी टीका भी  
शीघ्र ही प्रकट होगी मू० ६)

पाँडवपुराण—शुभचंद्राचार्यके संस्कृत ग्रन्थकी पं० घनश्यामदासजी न्यायतीर्थ कृत हिंदी  
टीका । पक्की जिल्द मू० ५॥)

नीचे लिखे पते पर अपना पता लिखकर घर बैठेही सब जगह के नये रूपे ग्रन्थ व हर  
किस्म की पुस्तकें मंगा लिया करें ।

बिलने का पता—बद्री प्रसाद जैन मालिक-श्रीजैन भारती भवन काशी ।

जगन्नाथ प्रेस, राजघाट-काशी में छपा ।

